प्रेम पत्र

किसान बजट

पूज्य चरणसिंह जी, सादर प्रणाम

चौधरी हो तो आप जैसा हो ! साहूकारी का काम तो बनिये लोग करते आये थे, चौधरियों का काम केवल खर्च करने का रहता था। परन्तु आपने अब का बजट सुना कर, सबकी जेब कतर ली।

मुझे आशा थी कि आप कम से कम ग़रीबों को छोड़ देंगे। लेकिन आपने मिनिस्ट्रों और भिखारियों, सबकी जेब पर डाका डाल दिया। सरकारी खज़ाना भरे या न भरे, दीवानों की जेबें खाली हो गई हैं।

बड़े बड़े सेठ अब और भी बड़े सेठ बन जाएंगे। इस साल में कुछ करोड़ नहीं अरबों का व्यापार बढ़ा लेंगे और चौधरी चरण सिंह की जय बोलेंगें। लेकिन इसके साथ साथ जार्ज फर्नेन्डीज साहब को गद्दी से उतारने की आवाज उठाएंगे।

क्यूँकि रुपये पैसे के खेल में अभी आप नादान हैं, कमसिन हैं, नासमझ हैं इसलिये आपकी सेवा में एक सुझाव देना चाहता हूँ।

सुझाव यह है कि पापड़वाले की जेब पर डाका डालने का सबसे बढ़िया तरीका है लाटरी निकालना। आप केवल रुपयों की नहीं बल्कि शादी की लाटरी, कार की लाटरी, मकान की लाटरी, दुकान की लाटरी, तलाक की लाटरी, बच्चों की लाटरी, सांस लेने की लाटरी, इन्कम टैक्स देने की लाटरी और लोक सभा की मिनिस्ट्री की लाटरी सब निकाल दीजिये। फिर आपको हर साल बजट में कोई टैक्स लगाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

आपका

चिरौंजी

मुख पृष्ठ पर

गंज का मतलब समझिये
गंज के लाख प्रकार
बे मतलब मत गंज करो
मतलब का संसार
मतलब का संसार
करो तुम भी कुछ अपनी
चकाचौंध करो सभी को
बजा के फोन की घन्टी

अंक : ६, वर्ष १५. २२ मार्च से २८ मार्च ७९ तक

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दें
छमाही: २५ रु०
वार्षिक: ४८ रु०
द्विवार्षिक: ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिए पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

काका के कारतूस

प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के, उत्तर काका हाथरसी के

आफताब आलम, धनबाद (बिहार)

प्र० : किसी मंत्री को फंसाने की तरकीब बताइए काका ?

उ० : मक्खन लेपन की कला, सीख जायँ यदि आप,
मन्त्री-मंत्राणी फंसें, कटें सकल संताप ।

रघुवीर सिंह आजाद, मुरसान (उ. प्र.)

प्र० : आप ही सब के काका हैं, या आपका भी कोई काका है ?

उ० : पूछताछ का मुफ्त में देख रहे हो ख्वाब,
कूपन चिपकाया नहीं, कैसे देंय जवाब ।

सतीश कुमार रामटेके, नागपुर-२१

प्र० : क्या दिल की बेचैनी सिर्फ मिलन के लिये ही होती है ?

उ० : बेचैनो के सैंकड़ों कारण हैं प्रिय दोस्त,
वोट, नोट, प्रिय, प्रेयसी, या सरकारी पोस्ट ।

रेखा बुक डिपो, लाखेनगर, रायपुर (म. प्र.)

प्र० : जिन्दगी और मौत में कौन महत्वपूर्ण है ?

उ० : पैदाइश के साथ ही, आवश्यक है फौत,
चोली दामन की तरह, समझो जीवन मौत ।

प्रमोद कुमार सिन्हा, पटना सिटी

प्र० : रास्ता चलते कोई मुसीबतजदा सुन्दरी मिल जाये तो ?

उ० : हुस्न देख कर नियत में मन आने दो खोट,
निष्कामी बन कर उसे दे दो दस का नोट ।

गोपाल कुमार 'एग्रीको' जमशेदपुर

प्र० : बच्चों के शौक मौज में बुजुर्गों की दखलंदाजी मुनासिब है क्या ?

उ० : बच्चों के हर काम में, दखल देंय जब आप,
सोचेगा वह रात दिन, जल्द मरे यह बाप ।

मदन मोहन मुण्डा, बुण्डू (रांची)

प्र० : भगवान राम ने हजारों राक्षस मारे, फिर भी उनको नरक में क्यों नहीं भेजा गया ?

उ० : हिंसक की हिंसा करो, लगे न बिल्कुल पाप,
खटमल को हम खाट पर मसल देंय चुपचाप ।

तिलकराज शैलेन्द्र, पानीपत

प्र० : घर के दरवाजे अन्दर से, और दुकान के गेट बाहर से बन्द क्यों होते हैं ?

उ० : ताला लगा दुकान में लाला लपकानन्द,
लाली के घर में घुसे, कर दरवाजा बन्द ।

योगेश कुमार अग्रवाल, डीमापुर (नागालैंड)

प्र० : भगवान ने संसार की सृष्टि किस लिए की है ?

उ० : नर-नारी पूजा करें, हो फूलों की वृष्टि,
स्वार्थ-दृष्टि से प्रभु ने, रच डाली यह सृष्टि ।

सुदामा पानीवार, पिपरिया

प्र० : वर्तमान अनुशासन हीनता और अराजकता को देख एमरजेंसी बुरी थी क्या ?

उ० : आपाधापी चल रही शासन में चहुं ओर,
फोड़ा फूटा, मगर अब फुंसी है घनघोर ।
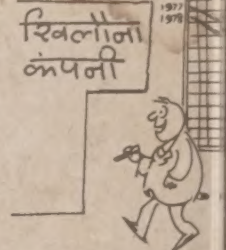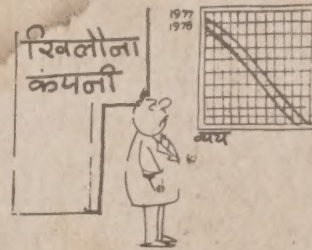
विजय कुमार जैन, बनमनखी (बिहार)

प्र० : मेरे दिल की धड़कन बढ़ रही है, इसका इलाज ?

उ० : वादा झूठा कर गई, पड़े न दिल को चैन,
गोली खाकर नींद की, सोजा बेटा जैन ।

वीरेन्द्र सिंह तिलैयाडैम, (हजारी बाग)

प्र० : मन्दिर के पुजारी और प्रेम पुजारी में क्या फर्क है

उ० : पत्थर दिल वाली मिलीं, पत्थर पूजक कौम,
प्रेम पुजारी का हृदय, समझो जैसे मौम ।

श्रीपाल भारद्वाज, हलद्वानी मंडी

प्र० : अटल बिहारी बाजपेई को चीन यात्रा से क्या मिला ?

उ० : कुंवारे थे श्री अटल जी, मन ही मन मुसकाँय,
दुलहिन लाए चीनिया, राखें कहां छिपाय ।

अरुण उपाध्याय, होमियो कालेज, भरतपुर

प्र० : चरण सिंह तो मोरारजी से चिपक गए । बेचारे नारायण क्या करें ?

उ० : राजनरायण बदले की बंदूक चलाओ,
आप इन्दिरा गांधी के दल में घुस जाओ ।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर
नई दिल्ली-११०००

शशी कपूर का

जुनून

शशी कपूर, शबाना आजमी, नफ़ीसा

हुसैन जामिन जैदी

मामा, हमको एक पठान ने घूरा हमको स्टेअर किया।

चलो फिरंगियो! यहाँ तुम्हा
जान को खतरा है। मेरे सा
चलो। मैं तुम्हें अपने घर में
छुपाकर रखूंगा। मैं अप
माँ, बीवी बच्चों की भी
जान खतरे में डाल देना
चाहता हूँ।
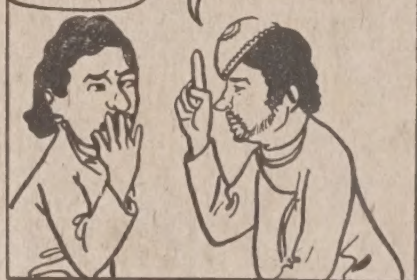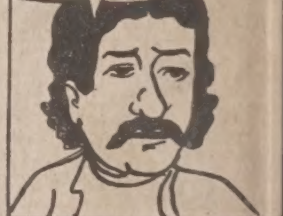
और दूसरे रोज़ ही जावेद खान ने फिरंगियों
को अपने घर में पनाह दी।

जावेद भाई, यह क्या अन्याय है? आपने खुद कहा था कि जो फिरंगियों को पनाह देगा उसे सख्त से सख्त सज़ा दी जाएगी। फिर आपने खुद....

अबे तू भूल रहा है कि मैं हीरो के साथ साथ अब निर्माता भी हूँ। भला मुझे कौन सज़ा दे सकता है।

मैं उस फिरंगन से शादी करूंगा। दर-
असल मुझे गरारी आँखे बेहद पसंद हैं।

अब तुम्हें शर्म आनी चाहिए। वहाँ जंग जीतने के लिए कितने ही नौजवान शहीद हुए जा रहे हैं और तुम शादी शुदा होकर इश्को महोब्बत के गुलछर्रे उड़ा रहे हो।

बुरा टुमें क्यों लग रहा हाओ? बुरा टो हमें लगना कू मांगटा।
क्या यही है मेरी सौतन?
हम टुम्हारा सौटन नहीं है। इन फॅक्ट टुम हमारा सौटन है।

आओ, सरफ़राज़। अब मैं भी ज़रा जंग में लड़ कर
अपनी मर्दानगी दिखादूं।

क्यों नहीं?
जावेद खान मेरी तलवार छिन गई है।

मैं मजबूर हूँ, सरफ़राज़। मैं तुम्हें अपनी तलवार दे तो देता पर मेरी होने वाली दूसरी पत्नी नफ़ीसा विधवा हो जाती और यह बात मैं जीते जी तो सहन नहीं कर सकता।
Husain Zamin

जावेद, आप जंग से अकेले ही बच कर आ गए?
कमाल है तुम हीरो लोगोंकी। इतने खून खराबों में तुम्हारे शरीर पर खरोंच तक नहीं।
फिरंगी कहाँ है?
गिरजा घर में।
घर में तो तुम परदा करती हो और यहाँ बिना बुरखा ओढ़े.... खैर।

दरवाजा खोलो, मैं जावेद बोल रहा हूँ। मैं तुम्हारी लडकी को एक बार घूर कर देखना चाहता हूँ। उसे स्टेअर करना चाहता हूँ।

अच्छा, टो टुम ही हो वह पठान जो हमारा पुत्री को घूरा। उसको स्टेअर किया।
मामा, हमको यह पठान ने घूरा। हमको स्टेअर किया।
समाप्त

केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

राजेश 'पप्पू' माधोपुरी—लुधियाना : प्यार की दीवार को पक्का करने के लिए क्या करना चाहिए ?

उ० : अपनी हड्डियां पक्की करने की कोई तरकीब सोचिये, दीवार तो कच्ची भी चल जाएगी।

अशोक कुमार गर्ग—मेरठ : कोई हाथ उठा कर भगवान से प्रार्थना कर रहा हो तो आप क्या सोचते हैं ?

उ० : यही सोचते हैं कि वह कह रहा है, 'हे भगवान, इस हाथ को इस योग्य बना कि यह सदा दूसरों की जेब में पड़ा रहे और किसी को कानों कान खबर न हो।

सुरेश चन्द्र शर्मा निशांत—जबलपुर : आप में और श्री राज नारायण में क्या अन्तर है ?

उ० : केवल इतना ही कि जिस बात पर वे रोते हैं, उस पर हमें हंसी आ जाती है।

सावित्री वर्मा—गोला बाजार : क्या बिल्ली से दोस्ती करने पर मेरा आंसू बहाना बन्द हो सकता है ?

उ० : अवश्य ! इस बात की गारण्टी आपको खुद लेनी होगी कि एक रुपया हर सप्ताह जेब से निकलने पर आप आंसू बहाना शुरू नहीं कर देंगे।

चिरंजी बड़ोलिया—नई दिल्ली : चाचा जी, क्या यह सच है कि आप अपने स्टेनलैस स्टील के चमचों के ही उत्तर देते हैं ?

उ० : हम आपके प्रश्न का उत्तर दे रहे हैं, अपना सर पत्थर से टकरा कर अब यह फैसला खुद आपको करना है कि क्या उसमें से स्टेन लैस स्टील की आवाज निकलती है।

भाई अमर कुमार श्रेष्ठ, 'मंजू'—फतेहपुर : चाचा जी, डाक्टर झटका में सबसे बड़ा कमाल क्या है ?

उ० : उनके पास हर इलाज की बीमारी है।

प्रदीप कुमार गुलशन—नागपुर : वादा करके भी कोई न आये तो सबसे अधिक तकलीफ किस बात की होती है ?

उ० : जिसके लिये हम कहते हैं :

उनको न आना था, न आते, बिगड़ता क्या था,
पर वो दुश्मन के जरा सर की कसम तो खाते।

सम्पतराम, जयराम—जोधपुर : क्या आप इस काबिल नहीं हैं कि आपको पागल खाने में भरती करवा दिया जाये ?

उ० : इतने काबिल तो हम हैं, पर इतना सोच लीजिए कि वहां हमारी संगत में रह कर बेचारे अच्छे भले पागलों का कबाड़ा हो जाएगा।

जगजीत सिंह छाबड़ा—फुसरो : डियर अंकल आपने चाची की सूरत देख कर शादी की थी या घूंघट में ही फेरे हुए थे ?

उ० : आप भी कैसी बातें करते हैं जगजीत सिंह जी, भला कोई आँखों देखी मक्खी निगलता है ?

बिनोदपुरी रंजू—लुधियाना : क्या आपको भगवान ने कभी कुछ छप्पर फाड़ कर दिया है ?

उ० : जी हां, उसकी बदौलत आज रोज सर फुड़वाना पड़ता है।

अमित अग्रवाल—देवली : चाचा जी, क्या कभी ऐसा हुआ है कि आपको राह में कोई बदमाश मिला हो और आप सर पर पांव रख कर भाग लिए हों ?

उ० : बदमाश तो रोज ही मिलते हैं। पर कोई हमें अपने सर पर पांव नहीं रखने देता।

कुरेशी नबी अख्तर—बम्बई : चाचा जी मैं भी आपकी तरह लोगों का मन बहलाना चाहता हूं। बताइये क्या करूं ?

उ० : दहाड़ें मार-मारकर रोइये और फिर दीवाना हाथ में लेकर हंस दीजिये और आने जाने वालों के गिरेबान पकड़-पकड़कर कहिये :

यूँ रोते-रोते हंस देना, वहशत तो नहीं सौदा तो नहीं,
इस बात पे आ जाती है हंसी, किस बात का हम गम करते हैं।

इकबाल सिंह धींगड़ा—जीन्द : मुझे गोल-गप्पे खाने का बहुत शौक है। इस आदत को छोड़ने के लिए क्या करूं ?

उ० : दीवाना पढ़ते रहिये और हमारी जान खाइये।

भूपेश पाण्डे—मदसार : क्या आप यह मानते हैं कि भगवान ने इन्सान को बनाया है ?

उ० : जी हाँ, और यह भी कहते हैं कि इन्सान ने भगवान को बनाया है।

राज कुमार कासलीवाल—डीमापुर, नागालैंड : फिल्म देखने से हानि होती है या लाभ ?

उ० : यह तो देखने वाले पर निर्भर है कि वह फिल्म की बुराई से प्रभावित होता है या अच्छाई से।

नरिन्द्र कुमार निन्दी—कपूरथला : चचा जान, आप किस देश के रहने वाले हैं ?

उ० : किसी जमाने में कहते थे :

हम उस देश के वासी हैं, जिस देश में गंगा बहती है।

पर अब तो बार-बार मुँह से यह निकलता है :

खिड़की से उसे जब देखते हैं,
तब आंख यह झुक कर कहती हैं।
उस घर के पास हम रहते हैं,
जिस घर में गंगा रहती है।

जगजीत सिंह राणा—श्रीनगर, दिल्ली : जनता पार्टी को कैसे हराया जा सकता है चाचा जी ?

उ० : आप यह हत्या क्यों अपने सर लेना चाहते हैं। 'जनता पार्टी' के नेता जिस प्रकार अपनी लुटिया खुद डुबोने पर लगे हैं उसके लिये वह दिन दूर नहीं जब वे गलियों और सड़कों पर गाते फिरेंगे :

शम्मा की मानिन्द हम इस बज्म में
चश्मे-तर आये थे दामन तर चले।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक,
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

परोपकारी

बात-बे-बात की

काश! ऐसे फिल्मी समाचार हमें पढ़ने को मिलते

नूतन ने
परसों शाम

SAAWAN KUMAR'S
Saajan Bina Suhagan
USHA KHANNA
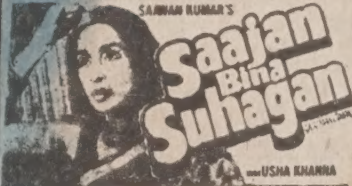
(साजन बिना सुहागन)
से प्रेरणा पाकर
गाजर बिना गजरैला
बनाने की कोशिश की।
इसी बात पर उसका पति व बच्चों
से झगड़ा हो गया

अभिनेत्री
रंजिता

Laila Majnu

लैला मजनू
के लवलैटर
चोरी से पढ़ते हुये पकड़ी गयी
डाकतार विभाग **रंजिता** पर मुकदमा चलाने
की सोच रहा है

लोगों की नौकरियों तथा आवास
फ्लैटों का झूठा लालच देकर

स्वर्ग नर्क
भेजने के आरोप में **जितेन्द्र** को
पुलिस ने पकड़ लिया।
याद रहे कि जितेन्द्र का एक
रिश्तेदार लोगों को गल्फ देशों
मे ऐसे ही झूठे लालच देकर
भेजने पर पहले ही गिरफ्तार
कर लिया था।

ओ. पी. रल्हन ने
अपनी प्रेमिका को
उसके बर्थडे पर

PHOOL AUR PATTHAR
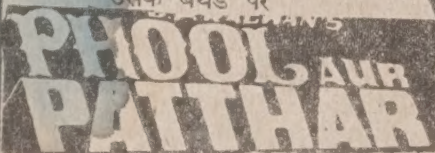
(फूल और पत्थर)
भेंट किये। प्रेमिका ने फूल रख लिये और
पत्थर वापिस उसकी खोपड़ी में लौटा दिये।

प्रेम चोपड़ा बीबी के
सारे जेवर पिछले इतवार की रेस में हार गया।
प्रेम से जेब कटने की कहानी सुन कर वह बोली
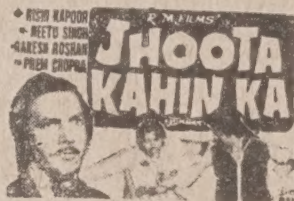
झूठा कहीं का
और बच्चों को लेकर
मायके चली गयी।

निर्माता **मोहन कुमार** को
कल की कॉक्टेल पार्टी में
सिगरेट सुलगाने के लिये किसी
ने लाइटर दिया। नशे में कांपते
हाथों से लौ ने मूंछों को

आतिश
बाज़ी का नमूना बना
दिया।

निर्माता निर्देशक
मोहन सहगल ने
समय पर अपने इनकम टैक्स रिटर्न भरने के

(कर्तव्य)
का पालन नहीं किया
और इनकमटैक्स विभाग की
ओर से उन्हें नोटिस
प्राप्त हुआ है

फिल्म के सैट पर गंजा हीरो
शराब पीकर आया और सबको
गालियां देने लगा। फिल्मी दुनिया
में

मान अपमान
का सिलसिला चलता रहता है
जब इस हीरो का पत्ता कटेगा तब
सब लोग उसकी दी गालियां
चक्रवृद्धि ब्याज समेत लौटा देंगे।

जीनत अमान
श्री नगर के गार्डन में

SHALIMAR

शालीमार
एक हिप्पी के साथ चरस पीती पायी
गयी। पुलिस ने उसके पर्स से
डेढ़ को ग्राम चरस भी बरामद कर
लिया

निर्देशक **जुगलकिशोर** ने
किराये का
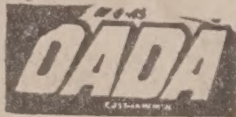
(दादा)

लेकर प्रोड्यूसर की
पिटाई करवाई
प्रोड्यूसर ने जुगल किशोर के
तीन रूपये देने थे

रेखा को
विनोद मेहरा की पत्नी ने
उसके

घर
में जादू टोने की पोटली
फैंकते रंगे हाथ
पकड़ लिया
और चिमटे से उसकी खूब ख़बर ली

अभिनेता **संजीव कुमार** ने
गायक **किशोर कुमार** से शादी कर
ली इस प्रकार उसने

HAMAARE TUMHARE
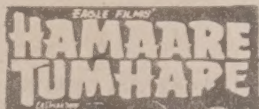
हमारे तुम्हारे
सबके अन्दाजों को गलत
साबित कर लिया।
आशा है दोनों की कंजूसी की आदत
उन्हें जीवन भर

प्रेम बन्धन
में बाँध कर इकट्ठा रखेगी

सिम्मी ने
मैडीकलइन्स्टीच्यूट में

DO BADAN
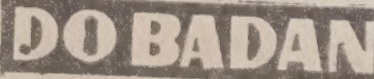
(दो बदन)
लेकिन एक ही सिर और दो ही टांगों
वाले बच्चे को जन्म दिया

धर्मेन्द्र ने एक डिब्बे में **हेमा** को
प्लास्टिक का चूहा

(दिल्लगी)
के तौर पर भेजा।
डिब्बा संयोग से हेमा की मां ने खोला
जो चूहा देखते ही चीख कर बेहोश हो गयी
अब तक वह जसलोक अस्पताल
में चेतनाहीन हैं

शशिकपूर के लड़के
कृणाल ने घर छोड़ा
उस पर देश में नशाबन्दी लागू करने का

(जुनून)
सवार हो गया
अब नशाबंदी का देश में प्रचार करेगा
पैदल घूम घूम कर

नीतू सिंह अंधेरी में

(जहरीली)
शराब की भट्टी
लगाते पकड़ी
गयी

सचिन अब

ANKHIYON KE JHAROKHON SE
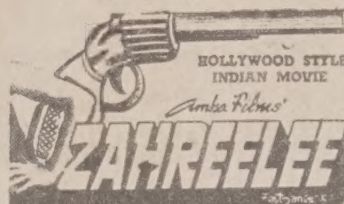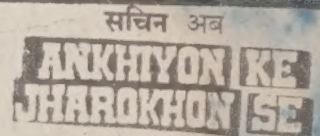
अंखियों के झरोखे से
नहीं देख पायेगा म्युनिस्पिल कमेटी ने
झरोखे को अवैध निर्माण करार
देकर तुड़वा दिया

शशिकपूर रात देर से घर
लौटने पर

बनकर गलती की माफी की भीख
मांगते पकड़ लिया गया
उस पर भिक्षावृति उन्मूलन
कानून के अंतर्गत मुकदमा
चलाया जायेगा

डाक्टरो की सलाह पर
अमजद खां ने आज जीवन की
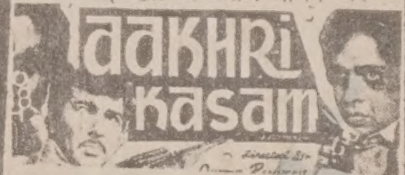
(आखिरी क़सम)
खायी। अब
वह और कस्में नहीं खायेंगे। मोटापा
कम करने के लिये डाक्टरों ने उन्हें
डाइटिंग कि सलाह दी है।अमजद को
दिन भर कसमें खाने की आदत है

राजकपूर की फिल्म
सत्यम् शिवम् सुन्दरम
देखते समय बोर होकर **नरगिस** को
जम्हाई आई और उठो

(राजद्रोही)
घोषित कर दिया गया

नया धारावाहिक उपन्यास (भाग-१२)

सुबह का तारा

लेखक—संगीता

में किसी भी मूल्य पर मधु का प्रेम नहीं खरीद पाया।

अगर ऐसा हो गया होता तो मैं सुप्रीम कोर्ट से सुशील को छुड़ा लेता।

सुशील ने फिर एक बार मुझ पर आक्रमण किया तो मैं रो पड़ा। मैं कैसे विश्वास दिलाऊँ कि मैं उसे अब भी चाहता हूं। अत्याधिक चाहता हूँ। मैंने कहा न, मैं एक नहीं दो हूँ। मेरा एक बटा दो सुशील को प्यार करता है और शेष एक बटा दो उससे घृणा करता है। इसीलिए जब उसने मधु को लिखा कि वह मुझसे शादी करले तो मैं रो पड़ा—फिर हँसा भी।

एक बार जब सुशील शहर में था तो मधु के पत्र चुरा लिए थे। उन्हें सुशील तक पहुंचने नहीं दिया। क्योंकि मैं चाहता था कि उन दोनों के सम्बन्ध बिगड़ जाएँ।

मैं सुशील का पत्र लेकर मधु के पास गया तो उसने मुझे दुत्कार दिया। तभी मैंने अहसास किया कि मैं बाजी हार गया हूँ।

इस घटना से पहले सरदार सिंह मेरे पास आया था। उसके पास मेरा रिवाल्वर है जिससे मैंने नादिर की हत्या की। उस रिवाल्वर का लाइसेंस मेरे नाम है। उस पर मेरी उँगलियों और हथेली के निशान भी हैं। उसके वे निशान उसी तारीख में ले लिए गए थे जिस तारीख को नादिर की हत्या हुई। बुलेट-एक्सपर्ट की रिपोर्ट भी उसी तारीख की है। और ये सारी चीजें सरदार सिंह के पास थीं। जिनके कारण वह मुझे ब्लैकमेल कर रहा था। वह सब कुछ करता जो मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता। लेकिन मजबूर था सब कुछ देखता रहता था। क्योंकि कायर हूँ।

तंग आकर मैंने सरदार सिंह को भी रास्ते से हटाने के बारे में सोचा।

लेकिन—

सरदार सिंह ने नादिर खाँ की पत्नी को सबकुछ बता दिया और उसने वे सारी बातें सीमा को बता दीं। सीमा ने किशोर को बताई तो किशोर ने सरदार सिंह को बायदा माफ गवाह बना लिया। मधु को पता चला कि हत्यारा मैं हूं, सुशील नहीं। उसने यह बात शीला को बताई। शीला ने अपने पति नरेन्द्र सिन्हा को मिनिस्टर के पास भेजा और केस का रिवीजन शुरू हो गया।

यह देखकर मैंने सरदार सिंह से कहा कि वह मुझसे जितना रुपया चाहे ले ले और नादिर की पत्नी को लेकर यहाँ से चला जाए। लेकिन सरदार सिंह ने कहा कि वह नहीं जायेगा। और वह जाने को तैयार न हुआ। जब मैंने रिवाल्वर निकाल उन दोनों को मार डालना चाहा तो न जाने सीमा कहाँ से आ टपकी। गोली उसे लगी और चार घण्टे बाद उसकी मृत्यु हो गई। उसने अपने बयान में कहा कि उसे न सरदार सिंह से दिलचस्पी है और न नादिर खाँ की पत्नी से। वह उन्हें इसलिए बचाना चाहती थी कि उनके मर जाने का सुशील की रिहाई पर कोई प्रभाव न पड़े।

सीमा मर गई—मेरे हाथों से—मेरी मासूम बहिन—मेरी यादों की कालिमा को उसने अपने खून से धो दिया। सुशील के अहसान का भी बदला चुका दिया।

सीमा का तीन साल का एक बेटा है—माँ है—बहिन भी। सीमा ने सुशील के लिए अपने भाई को निछावर कर दिया। मैं उस की लाश पर जी खोलकर रो भी न सका। मैं अपनी बहिन का हत्यारा हूँ। मैं सीमा के बेटे को अपना उत्तराधिकारी बनाता हूं।

आवाजें तेज होती गयीं।

चार बजने वाले थे।

सन्तरी टहल रहा था।

सुशील चुपचाप खड़ा था।

लोग पास आते जा रहे थे।

अचानक सुशील के होंठों पर मुस्कराहट फैल गई।

'मैं आज मृत्यु का आलिंगन करने जा रहा हूँ—और फिर मैं इस संसार से मुक्त हो जाऊँगा।'
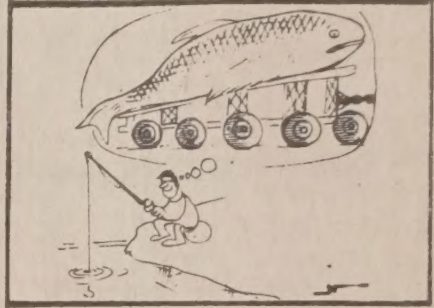
सुशील ने धीरे से कहा। और तभी वे लोग दरवाजे पर आ गए। उनके चेहरे खुशी से दमक रहे थे।

सन्तरी दरवाजा खोलने लगा।

सुशील ने व्यंगपूर्ण मुस्कराहट के साथ पूछा—

'क्या, कोई नया कैदी लाया गया है या मेरी अन्तिम यात्रा की तैयारी की जा रही है?'

'आप रिहा किये जा रहे हैं।'

दरवाजा खुल गया। वे लोग सुशील को अपने साथ लेकर कोठरी से बाहर आ गए।

सुशील को लगा जैसे वह धरती पर नहीं है। वह रोये जा रहा था।

उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

जेल के कर्मचारी जल्दी कर रहे थे।

'अभी तो काफी रात है?' उसने जेलर से कहा।

'अब रात कहाँ है मिस्टर!' जेलर ने ठहाका लगाकर कहा, 'अब तो सुबह होने वाली है। आप घबराइये नहीं। पूरा काफिला आपको लेने आया है।'

सुशील जेल के बाहर आया तो सबसे पहले उसे मधु दिखाई दी। उसने मधु को अपनी बाँहों में भर लिया और फिर पूछा—

'रंजन भाई कहाँ?'

लेकिन किसी ने उत्तर नहीं दिया। सब उसे हार पहनाने लगे। नूरपुर के किसान—कस्बे के लोग, नरेन्द्र सिन्हा, शीला भाभी—और एक आदमी और भी था जिसे सुशील

पहली नजर में पहचान नहीं पाया ।

मधु ने बताया—'यह किशोर भाई हैं ।'

सुशील को लग रहा था जैसे वह मरने से पहले जागते-जागते सो गया हो और सपना देख रहा हो । वह उस सपने को तोड़ना नहीं चाहता था ।

वह बढ़कर किशोर से लिपट गया ।

'सीमा नहीं आई ?'

'नहीं पार्टनर !' किशोर ने भर्राए स्वर में कहा, 'तुम तो जानते ही हो कितनी जिद्दी है वह ? उसने कहा है कि सुशील भाई को खुद आना चाहिए—।'

किशोर के शब्द गले में अटक कर रह गए ।

मधु सुशील को हटा ले गयी ।

उसे डर था कि अगर सुशील को सारी बातें इसी समय मालूम हो गईं तो कहीं वह अपना मानसिक सन्तुलन न खो बैठे ।

वह सुशील को घर ले आई ।

सुशील के दिल में एक धड़कन जाग उठी थी—जी चाहता था कि उसे एकान्त मिल जाये और वह मधु को जी भरकर प्यार कर ले । डर था कि कहीं वह फिर मधु को पाकर खो न बैठे ।

जैसे ही एकान्त मिला, उसने मधु को अपनी बाँहों में भर लिया ।

'नहीं', मधु ने अपने आप को अलग करते हुए कहा और मुस्कराई, 'आज मैं प्यार करूंगी आपको—जी भर कर—!'

मधु सुशील का सिर अपनी गोद में रख कर बैठ गई ।

वह बोली कुछ नहीं । उसने अपने होंठ सुशील की पलकों पर रख दिए और न जाने कहाँ खो गई । जब सुशील ने उसे प्यार करना चाहा तो उसने सिर उठा कर धीरे से कहा, 'नहीं, नहीं—।'

भीगी मुस्कराहट के साथ उसका चेहरा निखर आया था । आँखों में अजीब-सी चमक जाग उठी थी । बालों की लटें सुशील के माथे पर बिखर गयीं और सुर्ख होंठों ने सुशील की पलकों को बोझिल बना दिया ।

सुशील भौंचक्का रह गया ।

शायद वह फिर जेल और फाँसी घर की ओर चला जाता, मधु को भी छोड़ देता । नादिर खाँ की हत्या के आरोप को फिर अपने सिर ले लेता, अगर रंजन ने केवल नादिर खाँ की हत्या के जुर्म का ही इकबाल किया होता ।

लेकिन सीमा—

वह जब भी सीमा के बारे में सोचता उसे ऐसा लगता जैसे कोई उसका कलेजा मसोस रहा हो । सीमा की याद आती तो वह सुध-बुध तक भूल जाता । किशोर को देखकर उसे और भी दुःख होता ।

किशोर ने उसे बताया था—

'बुलबुल, हम लोगों को हाल ही में तुम्हारे बारे में समाचार मिला था । सीमा सुनते ही बेचैन हो गई थी । वह मेरे पीछे पड़ गई थी कि फौरन चलो । हम लोग यहाँ रात को पहुंचे । सीमा रात में ही नादिर खाँ की पत्नी और सरदार सिंह से मिली । और दूसरे ही दिन उसने रंजन को बुरी तरह फटकारा । सुशील भाई, उसने सीमा को अपने पुराने मित्रों से मिलने के लिए मना किया था । उस दिन के बाद वह किसी से नहीं मिली । लेकिन तुम्हारी वजह से उसने अपनी बदनामी बर्दाश्त की और सारी घटना का सही-सही पता लगा लिया । रंजन ने अपने आपको फँसते देखा तो सरदार सिंह और नादिर खाँ की पत्नी पर गोली चलाई ताकि मुख्य प्रमाणों को समाप्त कर दिया जाए । लेकिन सीमा रंजन के इस इरादे को भाँप गयी और रंजन की गोली सीने पर खाकर उसने तुम्हारे निर्दोष होने के महत्त्वपूर्ण प्रमाणों को नष्ट होने से बचा लिया ।'

सुशील ने यह सब सुना । उसका दिल खून के आँसू रो रहा था । सीमा बहुत थोड़े

दिन उसके साथ रही थी, हवा के नर्म और मादक झोंके की तरह—और फिर चली गई ।

उसे अब ऐसा लगता था कि आरम्भ से ही—जब उसने रंजन के घर में पाँव रखा सीमा ने उसके हृदय में स्थान बना लिया था । वह केवल उसी को चाहता—मधु को भी नहीं—रंजन को भी नहीं—लेकिन सीमा—।

लेकिन यादों के काफिले आते, चले जाते । अतीत का हरियाली भरा मैदान पीछे छूट जाता । वह सोता, खजूर के पेड़ों की छाँव—सबकुछ छूट जाता । रह जाती बस मधु ।

कई दिन इसी तरह बीत गए ।

एक दिन सुशील चौंक पड़ा । उसने अभी तक रंजन का बयान नहीं पढ़ा था । उसे केवल यह मालूम था कि रंजन ने सीमा को इसलिए मार डाला कि वह सरदार सिंह को बचाना चाहती थी, रंजन के विरुद्ध उसने नरेन्द्र सिन्हा और किशोर की भी कोई बात नहीं सुनी ।

वैसे उसने कई बार मधु से कहा—

'मधु ! रंजन भाई से मिलने चलना है ।'

लेकिन मधु हर बार बड़ी खूबसूरती से टालती रही ।

आखिर एक दिन सुशील जिद कर बैठा तो मधु तैयार हो गई ।

सुशील मधु के साथ जेल पहुंचा ।

सलाखों के पीछे रंजन का चेहरा उभरा ।

उसने बाहर आने से इन्कार कर दिया । उन दोनों को भी अपने पास आने से मना कर दिया । वह सलाखों के पीछे खड़ा एक-टक दोनों को घूरता रहा । कभी उसके जबड़े भिंच जाते, कभी ढीले हो जाते—कभी मुँह फैल जाता तथा कभी सिकुड़ जाता ।

'रंजन भाई—!' सुशील ने आगे बढ़-कर पुकारा ।

'मत आओ मेरे पास—मैं अकेला आया था—अकेला ही जाऊँगा,' रंजन ने जोर से कहा ।

'रंजन भाई !' सुशील ने तड़पकर पुकारा ।

'रंजन भाई !' सुशील के स्वर में दर्द था ।

'क्यों आये हो ?' रंजन इस तरह बोला जैसे तेज आँधी में चीख उठा हो । 'घाव पर नमक छिड़कने—मुझसे यह कहने कि मैं सीमा

शेष पृष्ठ ४० पर

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि पिलपिल-सिलबिल हरयाणा के कपिल देव को
अपने खर्चे पर आस्ट्रेलिया फ्रैंक टीसन के स्कूल में फास्ट बॉलिंग की ट्रेनि
के लिये भेजना चाहते हैं। बैंक में उनके खाते में पैसे नहीं निकलते हैं। पै
का तुरन्त प्रबन्ध करना है। वह यह नहीं चाहते कपिल देव का खर्चा कोई अ
उठा कर हरयाणा वालों से श्रेय छीन ले। इसलिये पैसों का प्रबन्ध करने की
और सारी तरकीबें बेकार पाकर वे बैंक पर डकैती की योजना बनाते है
तीनों नकाब पहन कर निकटस्थ बैंक को पिस्तौल की नोंक पर लूटने के
निकलते हैं, उससे आगे।

निर्धन जनता के पास पैसा होना ही कहां है जो बैंक में जमा करा सके। इन बैंकों की सफेदी के पीछे अमीरों का काला धन मुस्करा रहा है। हम बैंक को लूट कर भारत में गरीब जनता के विद्रोह की चिंगारी भड़कायेंगे। हो सकता है हमारे डाके के बाद सारे देश में आग भड़क उठे और गरीबों के शोषक अमीरों को राख कर डाले। आई नेगी समझ में बात उल्लू की तरह देख रिया है।

इसकी समझ में बात कैसे आयेगी? इसके अक्ल के सेन गेट पर दर्जनों अज्ञान के सिपाही वर्दी पहन कर थ्री नाट थ्री की रायफलें लिये पहरा दे रहे हैं जो अक्ल की बात तो क्या भैंस को भी बगैर पास दिखाये अन्दर नहीं घुसने देते।
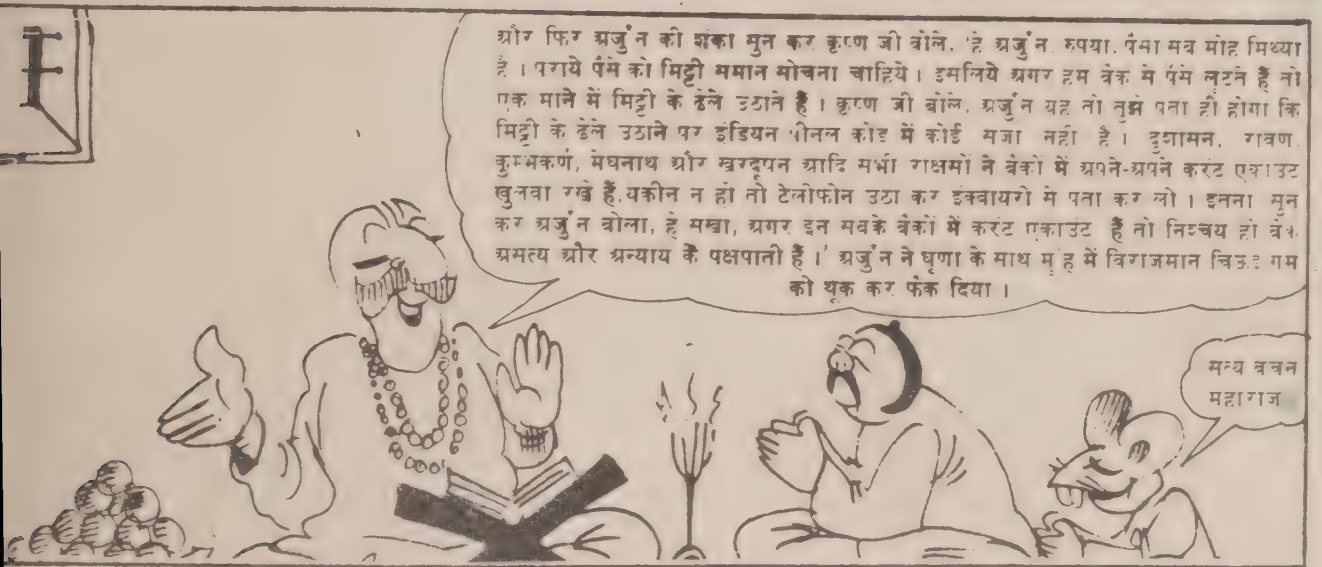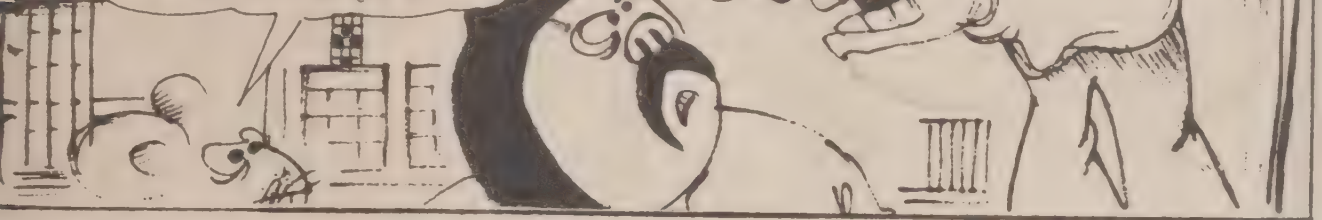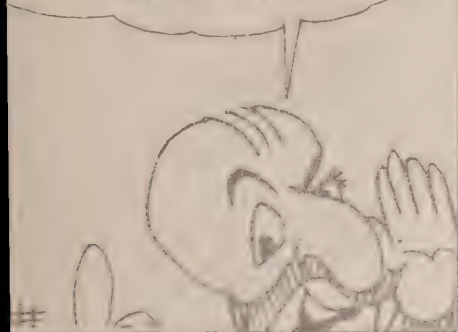
अब पिलपिल ने मुझे जो पार्ट बताया था वह अदा करना है। काले कपड़े सर से पांव तक पहन कर सिर पर सींग लगा सिलबिल के कंधे पर चढ़ना है चुपचाप और फिर एक चीख मार कर छलांग लगा कर भागना होगा।
अरे क्या है यह ? कौन है तू ?
मैं तेरे दिल का अन्धकार हूं
तू मेरे दिल का अन्धकार है ?
हां मैं तेरे दिल का अन्धकार हूं, अब मैं तेरे दिल में नहीं रह सकता। पिलपिल की ज्ञान की बातों से तेरे दिल में ज्ञान का उजाला फैल गया है। इतनी रोशनी हो गयी है जैसे शादी का पंडाल लगा होता है। मैं अज्ञान के अंधेरे में रहना ही पसंद करता हूं। अब मेरा गुजारा नहीं होगा यहां ! ओके बॉय टा टा-बाई-बाई-चिकी चिकी बूम बूम मायेमास दस्वी दुनिया ओ रिवाय।
ऐंह
भाई जी, मेरी आंख से यह झर-झर खुशी के आंसू बह रहे हैं। आज तक मेरे दिल में सचमुच ही अंधकार था। अकल का फ्यूज चौथी जमात में गणित के क्षेत्रफल के सवाल हल करते-करते उड़ गया। तब से अंधकार ही बना रहा था। आज तुमने अपनी ज्ञान की बातों से फ्यूज लगा दिया और ज्ञान की बत्ती से मेरा तन मन जगमगा रहा है।
अब तेरी समझ में आ गया होगा कि बैंक पर डाका डालना कोई अपराध नहीं है। यह तो पूंजीपतियों द्वारा बनाये कानून की शरारत है। खुदा की बड़ी अदालत में यह पुण्य का काम है।
मैं सब समझ गया हूं। पूंजीपतियों की चालाकी से ही गणित के कठिन सवालों ने मेरे दिमाग का फ्यूज उड़ा दिया था।
अब मुझे कोई मूर्ख नहीं बता सकेगा और बैंक को लुटने से नहीं बचा पायेगा। बैंक में पैसा हमारा है। यह पैसा गरीबों के शोषण द्वारा कमाया गया पैसा है और हम गरीबों के रहनुमा हैं। अगर किसी दीवाना पढ़ने वाले ने पुलिस वालों को हमारी योजना बता दी तो उसकी खैर नहीं होगी। सबसे पहले हम उसी से निबटेंगे। दीवाना पढ़ने वालों में भी कई गद्दार होंगे, अमीरों के जासूस, लेकिन चिन्ता की कोई बात नहीं है मैं सब सम्भाल लूंगा। सोया शेर जाग उठा है। एक ही पंजे की मार से सबको भंभोड़ कर रख देगा ! इस बैग में मशीन गनें हैं हमारे पास।
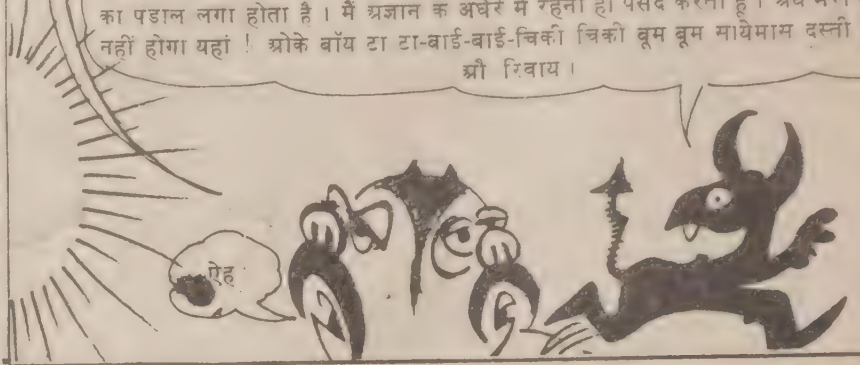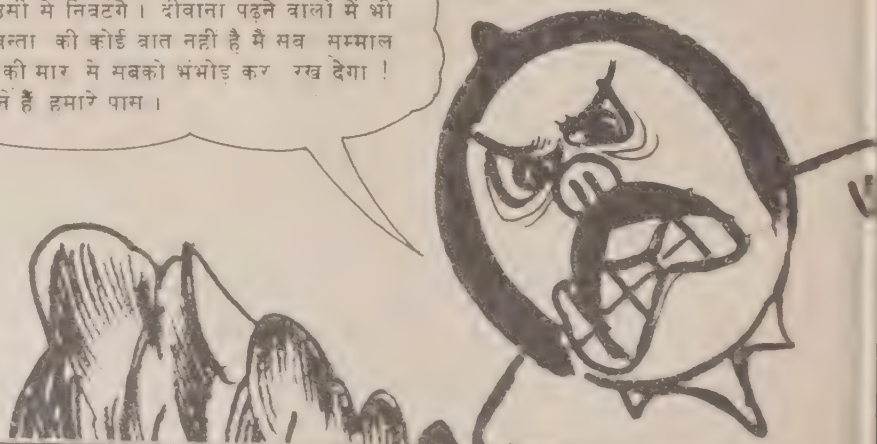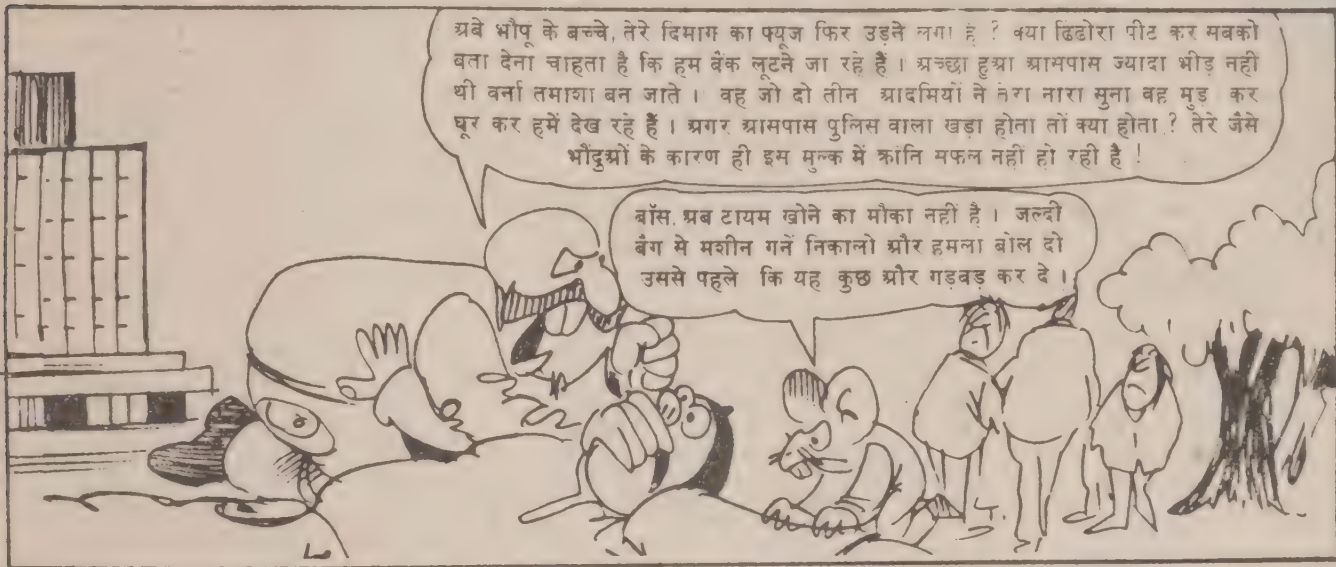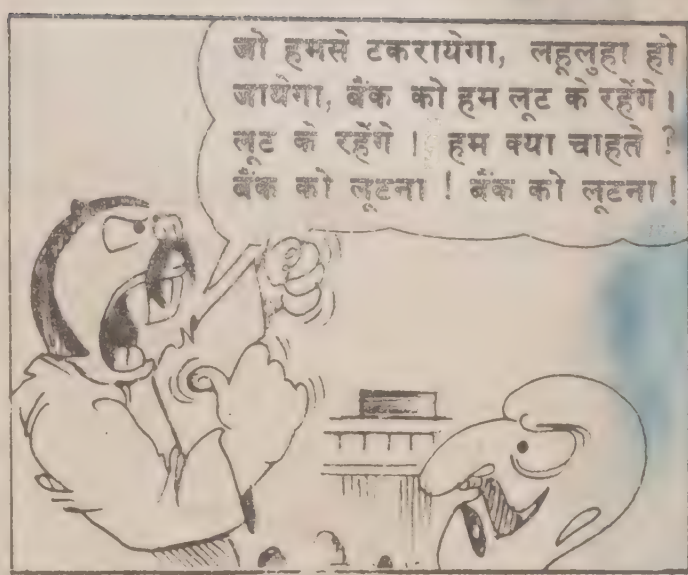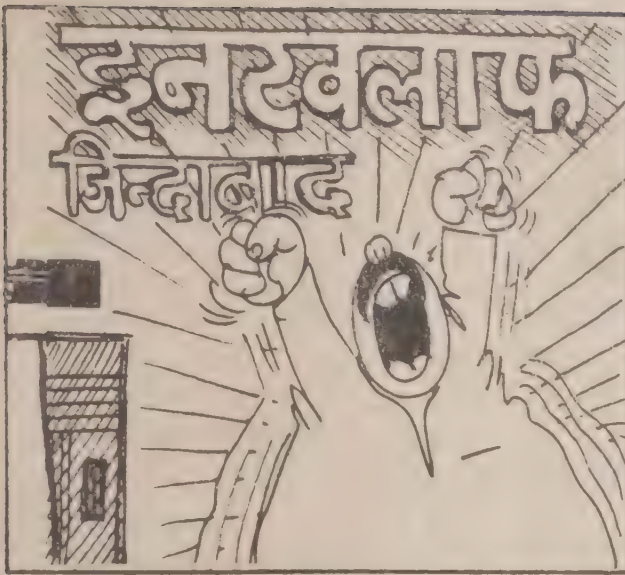
पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये।

मैं हर सप्ताह दीवाना पढ़ता हूँ तथा मुझे दीवाना पढ़ने का इसलिये शौक है क्योंकि इस पत्रिका में खेल-खेल में प्रकाशित होता है जिससे कि मुझे अपने लिखे खिलाड़ियों के रिकार्ड में गलती ठीक करने को मिलती है। वैसे यह लेख हमारे यहां बहुत ही लोकप्रिय है। किसी सप्ताह देर से आने पर बैचेन हो जाते हैं। वैसे इसमें 'मोटू पतलू' सिलबिल पिलपिल, बच्चा जमूरा आदि सब अच्छे लगते हैं।

अजय बोहरा—देहरादून

दीवाना का ताजा अंक प्राप्त हुआ। पढ़ कर बिना टिकट स्वर्ग की सैर कर आये। वाह क्या जोरदार फाइटिंग की है सिलबिल ने मकड़ी के साथ। संगीता रचित 'सुबह का तारा' यूं तो रोचक है पर अभी तक कोई उद्देश्य नजर नहीं आया, शायद कहानी के अन्त में इस कहानी के उद्देश्य का पता चले। कृपया 'खेल खेल में' बन्द कर दें। आपने दो नये स्तम्भ आरम्भ किए—'गरीब चन्द की डाक' तथा 'तर्क-कुतर्क'। इसके लिये हार्दिक धन्यवाद।

योगेश कुमार अग्रवाल—डीमापुर

दीवाना अंक ३ मिला लेकिन बहुत देर बाद, फिर भी बहुत ही पसन्द तथा दिलचस्प रहा। फिल्म पैरोडी खालीमार (शालीमार) बहुत ही अच्छी लगी। इस बार के मोटू-पतलू, सिलबिल-पिलपिल तो बहुत ही अच्छे रहे। मदहोश होश में आ, पंचतंत्र अपनी जगह पर ठीक रहे। सवालयह है कुछ बोर रहा अगर आप सवाल यह है कि जगह कुछ और दे दें तो बहुत ही अच्छा रहेगा।

नरेन्द्र कुमार गाबा—हांसी

दीवाना का जनवरी माह का दूसरा अंक प्राप्त हुआ, यह पढ़ कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप हमारी अति प्रिय साप्ताहिक दीवाना पत्रिका में एक नई चित्र कथा 'चाचा की चौधराहट, प्रारम्भ करने वाले हैं। कितना अच्छा हो कि अगर आप 'चाचा चौधरी' भी उसी तरह से शुरू कर दें। 'दीवाना चिपकी' अगर आप इसी जगह कोई ज्ञान वर्धक, वाक्य छाप दिया करें तो कितना अच्छा होगा। दीवाना का हर अंक नई सजधज से प्राप्त होता है।

रणधीर सिंह राणा'—राज०

प्रिय पत्रिका दीवाना का अंक २ प्राप्त हुआ। साप्ताहिक पत्रिका दीवाना मैं काफी समय से पढ़ता आ रहा हूं। दीवाना में प्रकाशित सभी स्तम्भ रोचक तथा हास्यप्रद होते हैं। हमें इस बात की बहुत खुशी हुई कि आपने दीवाना में नया स्तम्भ तर्क-कुतर्क रखा। नए स्तंभ के लिए मेरी ओर से बधाई स्वीकार करें। इस अंक में प्रकाशित सुबह का तारा, भाग-६ बहुत अच्छा लगा। तथा चिल्ली लीला, सिलबिल-पिलपिल, मोटू-पतलू, फैण्टम आदि के मनोरंजक कारनामे अच्छे लगे।

रत्नेश खारिया 'रत्न'—म० प्र०

आज काफी प्रतीक्षा के बाद अपनी प्रिय पत्रिका दीवाना का ताजा और आकर्षक मुखपृष्ठ से सज्जित अंक ? पाकर मैं आनन्द के सरोवर में गोते लगाने लगा। सच मजा आ गया इसे पढ़ कर। इस अंक की सबसे आकर्षक लगने वाली सामग्री थी—भारत के दीवाने खेल, आपको पता लगता है कि फिल्म फैस्टिवल आ गया जब, काश ! हमें ऐसे विज्ञापन देखने को मिलते, अंधेर नगरी चौपट राजा, सवाल यह है ? के अलावा एक और नया स्तंभ गरीब चन्द की डाक, देख कर मन आनन्द मग्न हो उठा। इनके अतिरिक्त सभी स्थायी कलाकारों ने भरपूर मनोरंजन किया। सभी फिल्मी चित्र भी आकर्षक थे।

श्याम माहेश्वरी 'अशोक'—फारबिसगंज

दीवाना का जनवरी का अंक नं० ३ बहुत ही लाजवाब था। चिल्ली लीला को पढ़ कर काफी हंसी आई। दीवानी चिपकी बहुत सुन्दर लगी। फिल्म पैरोडी भी पसन्द आई। धारावाहिक उपन्यास सुबह का तारा का भाग नं० ७ बहुत ही रोचक था। मोटू-पतलू के कारनामे रहस्य से भरपूर थे। दीवाना में खेलों के प्रति बातें हमारा बहुत ज्ञान बढ़ाती हैं। परवीन बॉबी पर लेख भी सुन्दर ढंग से लिखा गया था।

अरुण कुमार सिन्हा—सिरसा

हंसी की फुलझड़ियां बिखेरता हुआ दीवाना का अंक ३ प्राप्त हुआ। दीवाना खोलते ही फिल्म पैरोडी शालीमार पर नजर पड़ी, इतनी रोचक लगी कि एक साथ तीन बार पढ़ डाली फिर भी बार-बार पढ़ने को दिल करता था। पिलपिल-सिलबिल तथा मोटू-पतलू के कारनामे अत्यन्त रोचक लगे। परवीन बाबी का लेख तो बहुत ही सुन्दर ढंग से लिखा गया था। दीवाना में आप कोई नई पहेली शुरू कर दें तो दीवाना की रोचकता और भी बढ़ जाए।

राज दीपक 'स्नेही'—सिरसा

दीवाना का अंक ३ प्राप्त हुआ। यह अंक नवीन बातों का महत्वपूर्ण संग्रह था। इस अंक में सबसे शिक्षाप्रद कहानी दस पैसे में आ गले लग जा, प्रतीत हुई। यह कहानी बिना विचारे जो करे सो पीछे पछताय, वाली कहावत को चिरतार्थ करती है। हमें कोई भी काम सोच समझ कर करना चाहिए। लेखक श्री मोहन प्रकाश अग्रवाल को मेरी ओर से बधाई

अनीता कुमारी शर्मा—ग्वालियर

पिछले दिनों घसीटाराम और उसका बन्दर जैसा मित्र अपने घर के पिछवाड़े एक सुनसान जगह पर जूडो के दाव पेच सीख रहे थे तो वहां एक पेड़ के नीचे जमीन खोदने वाले दो आदमियों को इस बात का शक हुआ था कि घसीटाराम और उसके मित्र को उनका जमीन खोदने का राज मालूम हो गया है। उनमें से एक आदमी 'कुंगफू', 'जूडो' और 'कराटे' का उस्ताद था। उसने घसीटाराम के मित्र भाई छछून्दर के ऐसा हाथ रसीद किया कि वह उछल कर पेड़ पर जा पड़ा और घसीटाराम के ऐसी धोबी पटखी लगाई कि उसका हाथ टूट कर धड़ से अलग हो गया।

उसी समय बहुत दूर एक सुनसान जंगल में बने टूटे फूटे किले में एक नागिन इस लड़ाई का हाल अपने दूरदर्शी ग्लोब पर देख रही थी। उस नागिन में यह शक्ति थी कि वह अपने माया प्रताप से जब चाहे एक सुन्दर लड़की बन सकती थी। उसे चेलाराम से कोई खतरनाक काम लेना था। घसीटाराम का कबाड़ा करने वाले दो लड़ाकू आदमी जब चेलाराम से उलझने लगे तो नाग सुन्दरी ने अपना लोहे का बजरंगबली चेलाराम की सहायता के लिए भेज दिया था। इसके बाद के हंगामे अब आगे देखिये, पढ़िये और घसीटाराम की जान को बीस साल तक दुआयें देते रहिये।

उस समय एक ओर तो डाक्टर झटका घसीटाराम के टूटे हाथ में टांके लगाकर उसकी मरम्मत कर रहा था, तो दूसरी ओर नाग कन्या का भेजा हुआ लोहे का बजरंगबली चेलाराम से लड़ने वाले पहलवान पर हमला कर रहा था।

लगता है अब अपनी जान की खैर नहीं भाई गेंडा सिंह।

समझ में नहीं आ रहा है पिद्दी पहलवान कि मैं क्या करूं ?
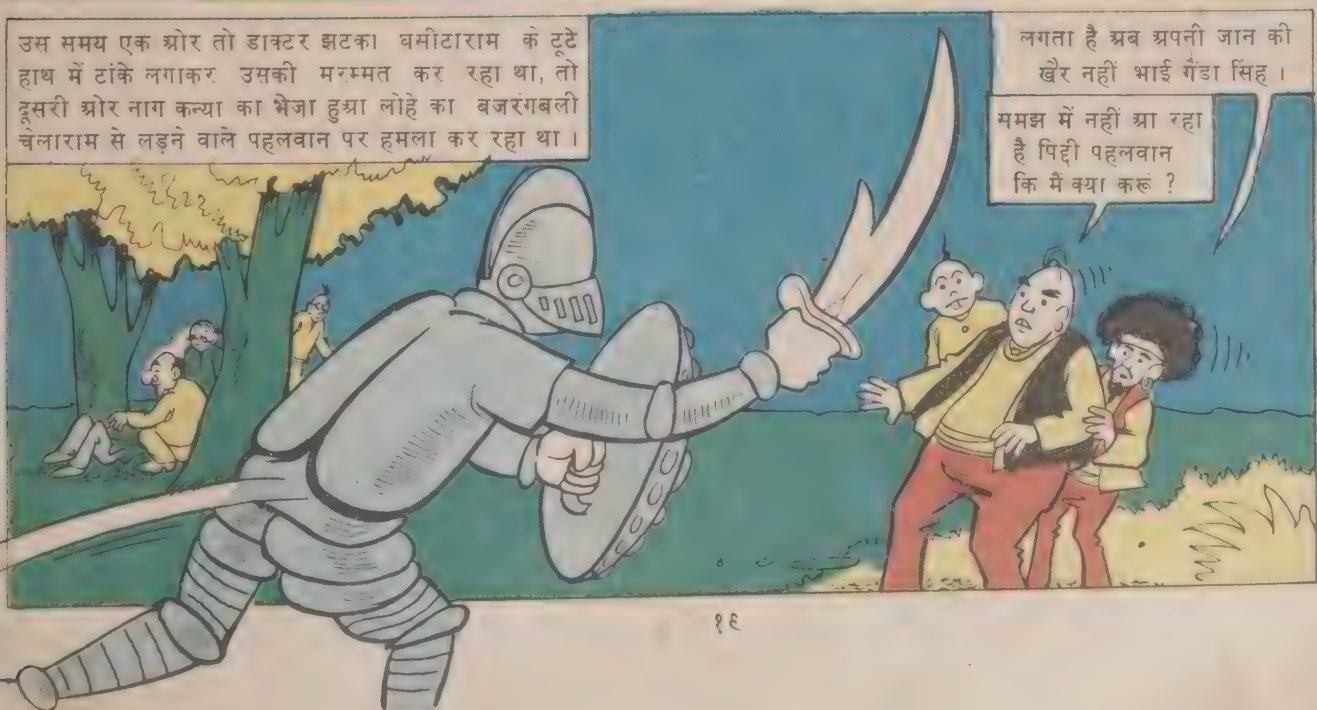
बजरंगबली अब फिर पलट कर गेंडा सिंह पर हमला कर रहा था।
करने के लिये अब एक ही काम रह गया है कि अपनी गर्दन इसकी तलवार के आगे से मत हटाना। गर्दन जितनी सफाई से कटेगी, उतनी ही तकलीफ कम होगी।
बजरंगबली जैसे ही गेंडा सिंह पर हमला करने के लिए
लपका, चेलाराम ने एक खाली ड्रम उसके रास्ते में लुढ़का दिया।
और ड्रम से बजरंगबली के ऐसी ठोकर लगी....
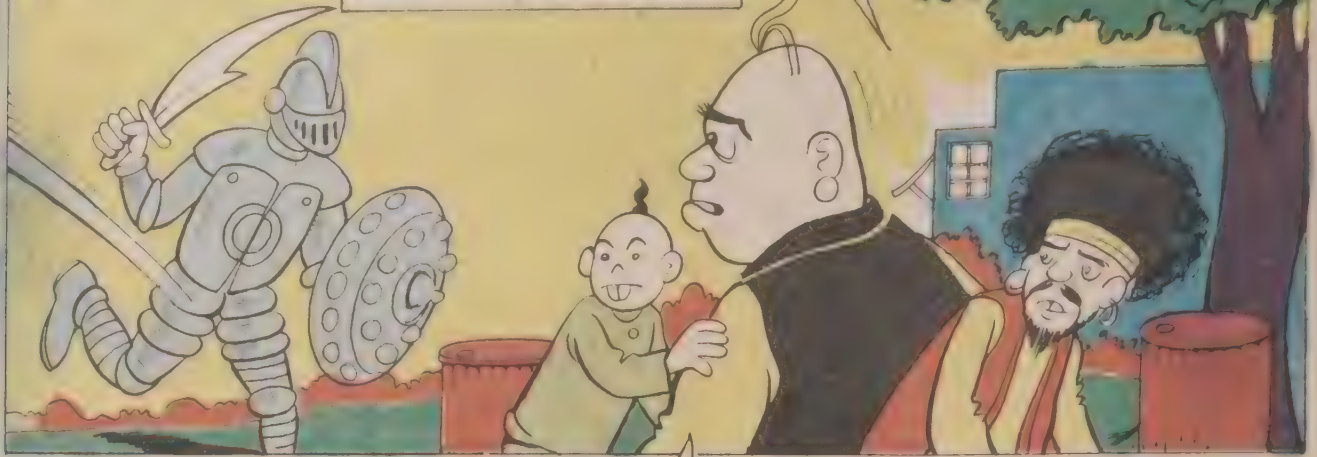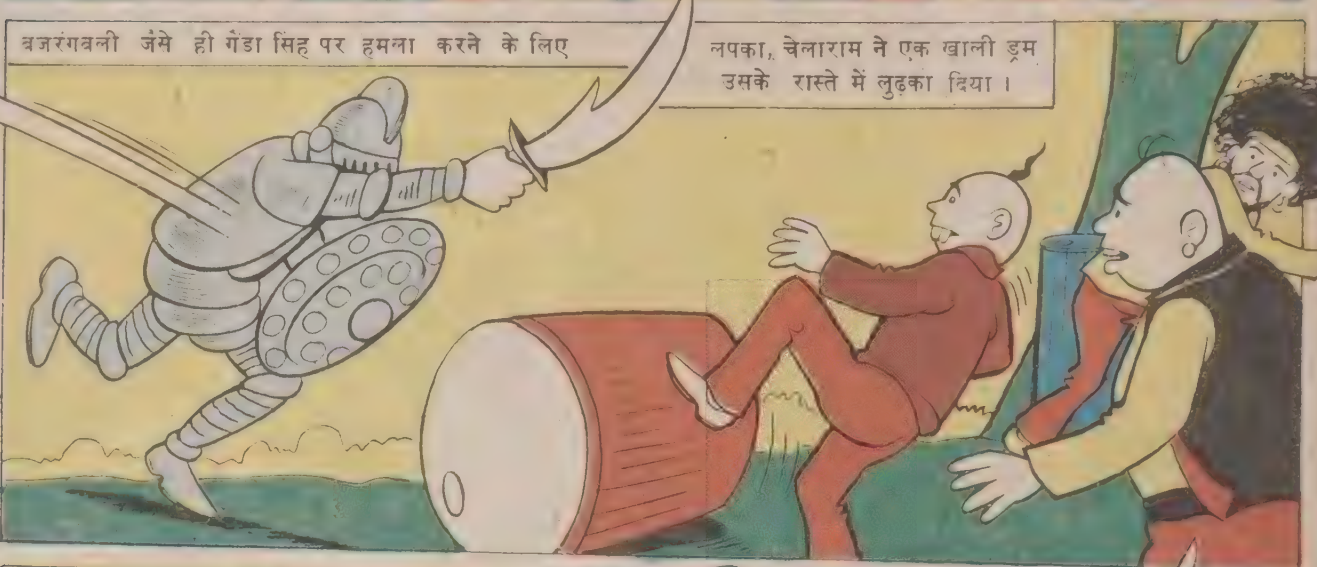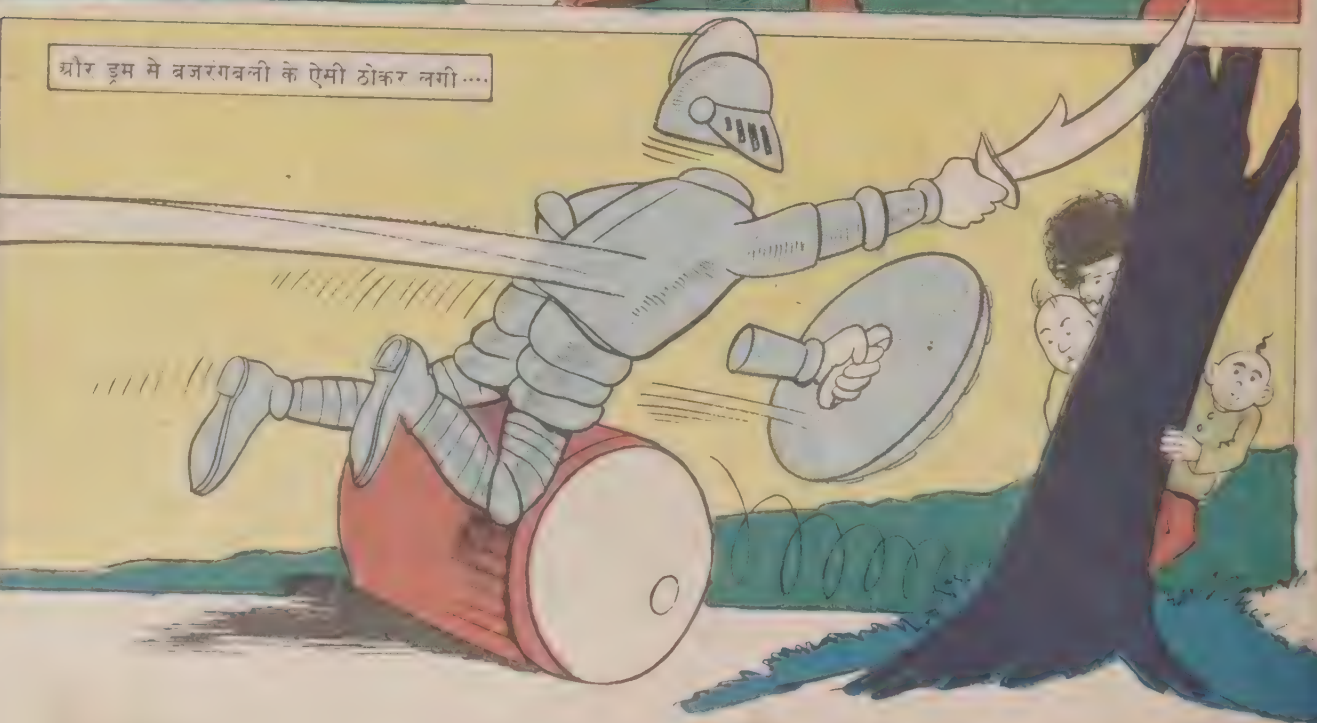
कि वह अपनी ही झोंक में एक पेड़ से टकराया और उसके मारे इंजर-पिंजर ढीले हो गये।
इस दांतों वाले छोरे ने तुम्हारी जान बचा दी गैंडा सिंह।

दूसरी ओर नाग कन्या यह देखकर गुस्से में फुँकारें मार रही थी।
मैं इस लड़के को बचाने के लिए जो भी शक्ति उपयोग में ला रही हूं

यह उसी का सत्यानाश कर रहा है। अब मुझे वहीं जाना होगा, जहाँ यह लोग हैं।

चेलाराम ने बजरंगबली का कवच देखा तो वह अन्दर से खाली था।
इसे कोई आदमी पहने हुए नहीं था ! यह अन्दर से खाली है ? यह कैसे सम्भव हो सकता है ? तो फिर यह योद्धा लड़ कैसे रहा था ?

अन्दर आदमी नहीं है ? क्या कह रहे हो ? फिर... यह लड़ाई कैसे लड़ रहा था।
इसका भी कोई राज खुल गया होगा। लड़ने वाले को तो बस लड़ना होता है। यह क्या जरूरी है कि उसके अन्दर कुछ हो।
जैसे तुम्हारे अन्दर दिमाग नहीं है। पर जान तो है। इसके अन्दर तो जान भी नहीं है।

यह सब क्या हो रहा है। ऊपरवालाही जाने।
ऊपर वाले को अपना पता नहीं है। नीचे देखो ! कोई नीचे वाला ही जानता होगा।

तुमने हमारी जान बचाई इसके लिए धन्यवाद।
पर तुम हमारा राज जान लोगे इसके लिए तुम्हारा कचूमर अवश्य निकालेंगे।
अजीब मोटी अक्ल के आदमियों से पाला पड़ा है।
हमारी अक्ल मोटी बता रहा है यह दांतों वाला चूहा। जरा इसकी खाल में भुस तो भर दे पिद्दी पहलवान।

यही बात है तो पहले मैं तुम्हारा बैंगन का भुर्ता बना दूंगा।

चेलाराम ने इस जोर से वार किया था कि पिद्दी पहलवान पछाड़ खाकर गिरा तो फिर उसके मुंह से आवाज तक नहीं निकली।
बिना चेतावनी दिये मेरा शेर जमीन पर दे मारा। मुझे क्या यह दाव आता नहीं ! लो, मैंने भी अब एक ही टक्कर में तुम्हें इस दुनिया से चलता न कर दिया तो मेरा भी नाम गेंडा सिंह नहीं।

गेंडा सिंह नहीं मेंढा सिंह कहो।
जैसे ही गेंडा सिंह ने चेलाराम पर हमला किया, चेलाराम ने फुर्ती से परे हटकर अपने को बचा लिया।
और गेंडा सिंह का मैंढा दीवार से टकराया तो दीवार तोड़ता हुआ उसके अन्दर घुस गया।
कितनी ईंटों का चूरा कर दिया है। जितनी अक्ल मोटी है सर उतना ही मजबूत है।
अब तक डाक्टर झटका ने घसीटाराम की मरम्मत करके भला चंगा कर दिया था।
एक पहलवान तो पहले ही चित था। अब दूसरे को भी 'कलर बाई टैक्निकलर' सितारे नजर आ रहे थे।
मरे नहीं हैं। दोनों में जान बाकी है।
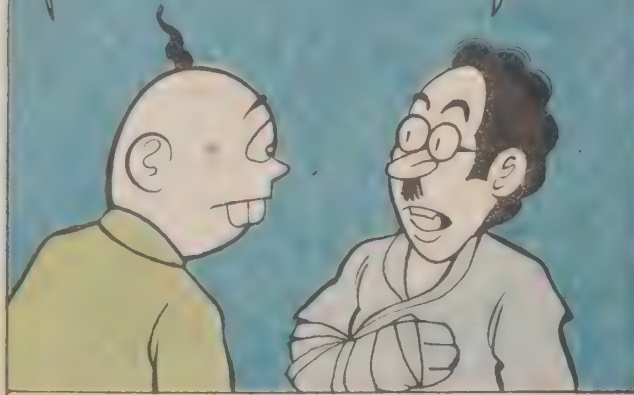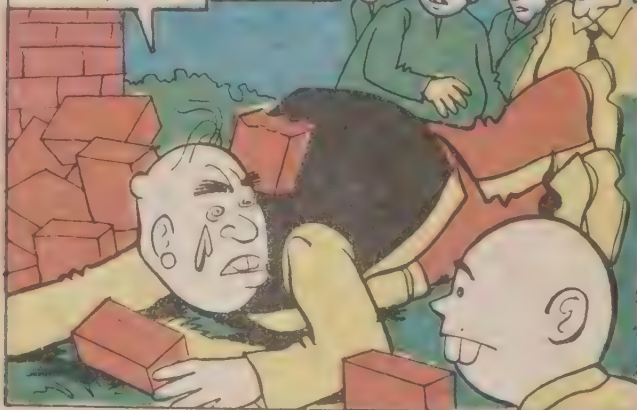
तभी पीछे से एक आवाज आई और सब चौंक गये ।

जरा मेरी बात सुनोगे चेलाराम ?

तुम्हारे पास बहुत बड़ा खजाना है और वह तुम मुझे देना चाहती हो ? ऐसा क्यों ।
मेरे भगवान की यही इच्छा है ।
कौन है तुम्हारा भगवान ?

भगवान नाग प्रकाश । भगवान नाग प्रकाश की यह इच्छा है कि यह खजाना तुम मुझ से ले लो और किसी को यह न बताओ कि खजाना तुम्हें कहां से मिला ।

जैसे जय प्रकाश नारायण ने आज तक किसी को नहीं बताया कि उनके पास नब्बे लाख रुपये कहाँ से आया । ऐसे ही तुम्हारे भगवान नाग प्रकाश मुझ से भी हेराफेरी करवाना चाहते हैं ।
कुछ भी हो तुम्हें मेरी यह बात माननी ही होगी ।

जानते हो तुमने इन्कार किया तो इसका अंजाम क्या होगा ?
अजीब धौंस है तुम्हारी । ठहरो मैं अभी आता हूं ।

पलट कर चेलाराम मोटू पतलू के पास आया और उसने सब बात साफ-साफ बता दी ।
वह लड़की कह रही है कि उसके पास एक बहुत बड़ा खजाना है । वह खजाना वह मुझे देना चाहती है ।
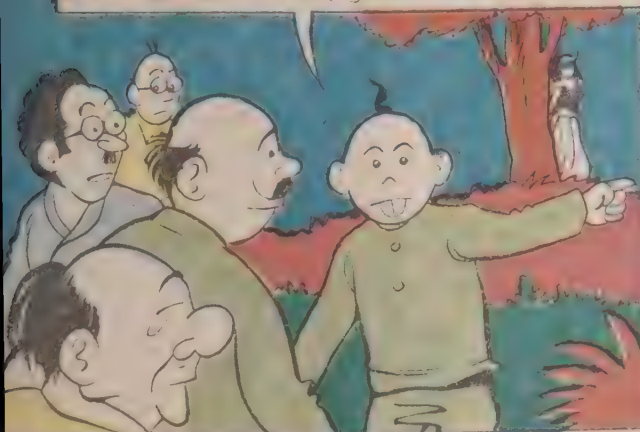
और इसे देने का कारण बताना नहीं चाहती ।
जरूर इसमें उसका कोई स्वार्थ होगा । वह तुम से कोई खतरनाक काम करवाना चाहती होगी ।
मना कर दो उससे हमें उसका कोई खजाना नहीं चाहिए ।

आगामी अंक में इन कलाकारों से फिर मिलिये

भारतीय क्रिकेट के लिए वरदान

कपिल देव

भारतीय क्रिकेट जगत में कपिल देव का पदार्पण अगर वरदान कहा जाये तो बेजा बात नहीं होगी। केवल तीन-चार महीने के अपने टैस्ट क्रिकेट जीवन में ही कपिल देव खेल प्रेमियों के लिए एक घरेलू नाम बन गया है। आज हम पाठकों को बीस वर्षीय कपिल देव के बारे में ही बतायेंगे।

कपिल का जन्म चण्डीगढ़ में ६ जनवरी १९५९ को हुआ था। उनके पिता १९४७ के विभाजन के समय पाकिस्तान छोड़ हरियाणा सिरसा में आकर बसे। पिता रामजीलाल का टिम्बर का व्यापार था। बाद में वे चण्डीगढ़ में बस गये। चार वर्ष पूर्व पिता के देहावसान के बाद कपिल के दोनों बड़े भाई धंधे को संभाले हैं।

बचपन में क्रिकेट कमेंट्री सुनकर कपिल के दिल में क्रिकेटर बनने का उत्साह जागा। दस वर्ष पूर्व जब विश्वनाथ ने कानपुर में शतक बनाया था उस समय की कमेंट्री कपिल को अच्छी तरह याद है। कपिल का सपना विश्वनाथ बनने का था। स्कूल के खेलों में भाग लेने का अवसर मिला। स्थानीय दौड़ कूद प्रतियोगिताओं में २०० व ४०० मीटर की दौड़ें जीतीं। १९७१ में कपिल हरियाणा स्कूल्स की ओर से पंजाब स्कूल्स के विरुद्ध खेले फिर उत्तर क्षेत्र स्कूल्स टीम में खेलने की बारी आयी और उत्तर क्षेत्र के कप्तान भी बने। दो मीटर ऊंचे कपिल देव इस समय चण्डीगढ़ में डी० ए० वी० कालिज में द्वितीय वर्ष कला पढ़ रहे हैं।

इन्टर यूनिवर्सिटी क्रिकेट मैच में ३२७ रन बनाकर कपिल ने रिकार्ड भी स्थापित किया है। फिर हरियाणा की ओर से कपिल ने रणजी मैचों में खेलना आरम्भ किया। पहले ही रणजी मैच में कपिल देव ने ३९ रन देकर ६ विकेट लिये। पिछले वर्ष भारत के कुछ खिलाड़ी नुमाइशी मैच खेलने कीनिया गये थे, कपिल भी उनमें थे। मैचों के अन्त में उन्हें मैन आफ दी सीरिज घोषित किया गया। टैस्ट मैचों की शुरुआत पिछले वर्ष

फैसलाबाद टैस्ट से पाकिस्तान में हुई। उसके बाद की कहानी तो सब जानते ही हैं। कपिल पॉप संगीत के प्रेमी हैं।

कपिल की सबसे बड़ी विशेषता भरपूर आत्म-विश्वास है। भारत कई वर्षों से तेज गेंदबाज की खोज में था कपिल के रूप में तेज गेंदबाज तो मिला ही ऊपर से बोनस के तौर पर कपिल की बैटिंग भी मिली। भारतीय

टैस्ट टीम में तेज आक्रामक बल्लेबाज की सख्त कमी थी जो प्रतिद्वन्दी टीम के बॉलरों का मनोबल तोड़ पाता। कपिल के आते ही फील्डर छितरा जाते हैं और बॉलरों की लाइन तथा लैंथ तेज पिटाई के कारण एक-दम बिगड़ने लगती है। टैस्टों में आत्म-विश्वास का होना बहुत जरूरी है। हमने अपने भारत में कई ऐसे प्रतिभाशाली बल्ले-बाज देखे जो तकनीकी दृष्टि से विश्व के श्रेष्ठतम बल्लेबाजों के स्तर के हैं परन्तु आत्म-विश्वास की कमी के कारण वे टैस्टों में जम ही नहीं पाये। ब्रिजेश पटेल और अशोक मांकड़ इसके जीते जागते उदाहरण हैं। मदन लाल भी बहुत अच्छे ऑल राउण्डर हैं लेकिन तेज गेंदबाजों के सामने वे आत्म-विश्वास खो बैठते हैं।

कपिल के पास आत्म विश्वास के अलावा प्रतिभा और क्रिकेट सूझबूझ की भी कमी नहीं है। जिस प्रकार कपिल मद्रास में जब भारत को जीत के लिए एक रन बनाना था किरमानी से बात कर थर्ड पर रन लेने दौड़, यह दर्शाता है कि ऐसी उत्तेजक घड़ियों में भी जब बड़े-बड़े खिलाड़ी उत्तेजित होकर गलती कर बैठते हैं कपिल पूरी तरह अपना मानसिक संतुलन बनाये रखते हैं। हमारे सामने ही नरसिम्हा राव तथा धीरज प्रसन्ना को टैस्टों में खेलने का अवसर मिला परन्तु आयु में बड़े होने पर भी उनके पास कपिल देव वाला आत्म-विश्वास नहीं था इसीलिए वे फ्लॉप हो गये।

कपिल के कारण एक जो सबसे ज्यादा लाभदायक बात होगी वह यह कि कपिल को देख देश के नये युवा खिलाड़ियों में एक नये जोश व उत्साह का संचार होगा। सैकड़ों युवा कपिल देव बनने की धुन में प्रेरित होंगे। कपिल को मिल रही प्रसिद्धी व यश उनके लिए प्रेरणा बनेगी और हमें पूरी आशा है कि एक कपिल का आना दर्जनों भावी कपिल देवों के लिए मार्ग बनायेगा।

अशोक रामटेके—नागपुर

प्र० : क्या आप यह बता सकते हैं कि किस-किस भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी की मातृ-भाषा मराठी है?

उ० : प्रायः जिनके उपनाम के पीछे कर आता है वे महाराष्ट्र के हैं। महाराष्ट्र के हैं तो मराठी आती ही होगी। कर वाले जैसे वेंगसरकर, गावस्कर, सोलकर व वाडेकर आदि।

खेल-खेल में

दीवाना साप्ताहिक

8-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग

नई दिल्ली-[illegible]

खिलाड़ियों को सुझाव

यदि आपका खेल गलत बन रहा है तो न तो क्रोधित होइए और न चुपचाप खड़े रहिये। ऐसा करने से अंक अर्जित करने का सुनहरा अवसर हाथ से निकल जायेगा। समझ लीजिये कि ऐसे मामलों में निर्णायक आपके पक्ष में 'श्रेष्ठ स्थिति' नियम का प्रयोग कर सकता है।

विपक्षी को अपने साथी की तरह आवाज देकर धोखा मत दीजिये।

जानबूझ कर अपनी गोल रेखा पर हिट मत कीजिये। इस अपराध के लिए पैनल्टी कार्नर का लाभ दिया जायेगा, जो कि आप की टीम की हार का कारण हो सकता है।

ऐसा कोई गैर कानूनी काम मत कीजिये, जिससे कि निर्णायक को अपको दोबारा मैदान से निकल जाने का आदेश देना पड़े क्योंकि इसका तात्पर्य शेष खेल में से आपका निलम्बन होगा।

निर्णायकों को धन्यवाद देना कभी मत भूलिये चाहे आप यह समझते हों कि वे कठोर थे। उन्होंने जो वे सबसे अच्छा कर सकते थे, किया है।

खिलाड़ी ध्यान रखें

खिलाड़ियों को जानना चाहिए कि जब उन्हें अस्थायी तौर पर निलम्बित कर दिया जाये तो उन्हें अपने गोल के जाल के पीछे रहना चाहिये।

पुश-इन या कार्नर लेने वाले के लिए उसके खड़े होने की अवस्था का कोई बन्धन नहीं है।

फ्री-हिट या पुश-इन के समय गेंद मैदान (जमीन) से ऊपर नहीं उठनी चाहिए।

किसी खिलाड़ी के शरीर से गेंद का प्रनिक्षेपित या विक्षेपित होना दोष नहीं है।

पैनल्टी स्ट्रोक को लेने वाले स्ट्रोक लेने से पहले निर्णायक के संकेत की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

गोल-रक्षक और पैनल्टी स्ट्रोक लेने वाले को पैनल्टी स्ट्रोक दिये जाने और लेने के बीच पोशाक या सामान बदलने की अनुमति नहीं है।

पैनल्टी स्ट्रोक लेते समय दोनों टीमों के शेष खिलाड़ी पास की २५ गज वाली रेखा के बाहर ठहरेंगे।

आप यदि स्ट्राईकर या दूसरे प्रतिरक्षक टीम के किसी भी खिलाड़ी के समान्तर हैं तो भी आप आफ साइड हैं।

खिलाड़ियों के लिए अम्पायर के संकेत

हाकी के खेल में अम्पायर द्वारा किए गये निम्न निर्धारित अन्तर्राष्ट्रीय संकेत अनिवार्य रूप से तत्क्षण मान्य करने आवश्यक होते हैं।

१. बुली

'बुली' के लिए अम्पायर दोनों हाथों से संकेत करता है।

२. **किक्स** (जब आवश्यक हो)

अम्पायर एक पैर को थोड़ा उठाकर हाथ से छूता है।

३. **अब्सट्क्शन** (जब आवश्यक हो)

एक हाथ को आगे करके गोलाकार संकेत देता है।

४. **गोल**

अम्पायर घूमकर दोनों हाथ मैदान के केन्द्र की ओर क्षैतिजिक दिशा में फैलाते हुए गोल होने का संकेत करता है।

५. **आफ-साइड**

निर्णायक रेखा पर खड़े होकर एक हाथ उसके समानान्तर फैलाता है। फिर अतिरिक्त संकेत देते हुए क्रमांक ६ के अनुसार फ्री हिट का निर्देष देता है।

६. **फ्री-हिट और पुश-इन तथा दिशा संकेत**

एक हाथ को क्षैतिजिक उठाकर दिशा संकेत देता है।

७. **१६ गज की हिट**

काल्पनिक १६ गज की रेखा के समान्तर दोनों हाथ फैलाकर संकेत करना है।

८. **कार्नर**

जहां से गेंद गोल-रेखा के पार हुई हो, वहां के पास वाले कार्नर-ध्वज की ओर एक हाथ उठाकर संकेत करता है।

९. **पैनल्टी कार्नर**

गोल की तरफ दोनों हाथों को क्षैतिजिक उठाकर संकेत करता है।

१०. **पैनल्टी स्ट्रोक**

बाएं हाथ से पैनल्टी स्थान का संकेत देते हुए दायां हाथ ऊपर आसमान की तरफ उठाता है।

११. **खतरनाक खेल या बुरा मिजाज**

इस दशा में अम्पायर खेल रोक देता है और दोनों हाथों को क्षतिजिक उठाकर अपने सामने ले आता है और धीरे से ऊपर नीचे करते हुए शान्त होने का संकेत करता है। यदि आवश्यक होता है तो पैनल्टी का भी संकेत देता है।

१२. **समय रोकना**

अम्पायर दूसरे अम्पायर या टाइम-कीपर की तरफ घूम जाता है और दोनों हाथों को पूरा फैलाकर सिर के पीछे कलाइयों में बांध लेता है।

१३. **प्रारम्भ या पुनः प्रारम्भ**

अम्पायर एक हाथ को आकाश की ओर उठाकर खेल शुरू होने से पूर्व अपने साथी अम्पायर की स्वीकृति की प्रतीक्षा करता है।

शेष आगामी अंक में

फैण्टम –
डियाना का अपहरण

पटाक !
!
ओह !

अंकल डेव !

हाय हाय···

बेवकूफ··· यह क्या तरीका है नीचे आने का ? क्या हुआ ?
ओह ! मेरा सिर···

डियाना ।
मेरे कमरे में कोई आदमी घुस आया है···
?!

उसका चेहरा नहीं देख सकी··· मैंने यह किताब उसके सिर पर दे मारी थी···
वो भाग रहे हैं दोनों···मैं अभी पकड़ता हूं ।

मै इनका पीछा करूंगा ।
मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूं ।

सुनो । कार की आवाज आ रही है ।
?!

मुझे ऐसा लगता है इस कार में वही लोग हैं ।
मैं अभी पुलिस को सूचित करता हूँ, हो सकता है इनको ढूंढ़ निकाले ।
(कौन हो सकते हैं ये लोग?)

नाराकीमो का जनरल नारा ।
अन्नदाता मेरे साथी दूसरी बार भी अपने लक्ष्य में असफल रहे
असफल ? क्यों ?

ओह···उसने उसके सिर पर एक किताब दे मारी ?
मेरा कत्ल दल··· सिर्फ एक किताब से बेहोश हो गया ?
एक मौका और देता हूं । इस बार अगर असफल रहे तो समझो तुम सब के सिर अलग कर दिये जायेंगे समझे ।

१५ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए **प्रतियोगिता**

पात्रों के नाम सुझाइये
इनाम 10रु०

चित्र में आप दो व्यक्ति देख रहे हैं। आपको इनके नाम सुझाने हैं। मान लीजिये हम इन दो पात्रों को लेकर नयी हास्य कथा का आरम्भ करना चाहते हैं (मोटू पतलू तथा मिलबिल पिलपिल की तरह) तो आप इनके क्या नाम रखना चाहेंगे ? सर्वश्रेष्ठ नाम भेजने वाले को पुरस्कार दिया जायेगा।

अन्तिम तिथि—३१ मार्च १९७९

होली हास्य कविता प्रतियोगिता

सुन्दरतम को आकर्षक पुरस्कार भी दीजिये

हम कविता की आखिरी तुकबन्दियां दे रहे हैं आपको बाकी कविता पूरी करनी है। कविता हास्यपूर्ण होनी चाहिए।

________________ भंग
________________ ढंग
________________ रंग
________________ आग
________________ राग
________________ भाग

अंतिम तिथि— ३१ मार्च १९७९
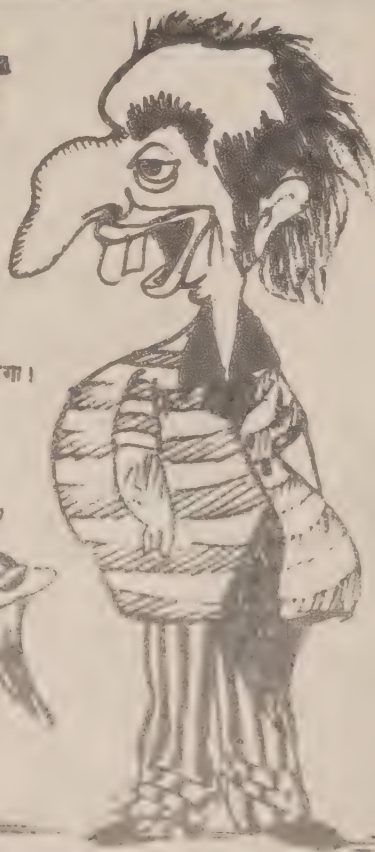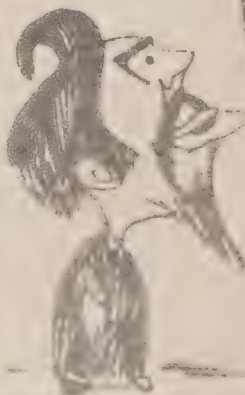
प्र० : घड़ियों में ज्यूवैल्स क्या होते हैं तथा कहां लगे रहते हैं ? अनुपम लाल—रांची

उ० : घड़ियों के इश्तहार में उसकी बढ़िया किस्म का ब्यौरा देते समय उसमें लगे ज्यूवैल्स या नगीनों को अवश्य बताया जाता है। वास्तव में घड़ियों में नगीने क्यों और कहां लगाये जाते हैं ?

कोई भी घड़ी हाथ पर लगाने की या दूसरी तभी उपयोगी होती है जब वो समय ठीक बताये तथा रोज-रोज खराब न हो। एक घड़ी में औसतन दो सौ ग्यारह पुर्जे होते हैं, इससे जाहिर ही है कि घड़ी एक पेचीदा मशीन से चलती है। आइये देखते हैं नगीने घड़ी के कार्य करने में क्या हिस्सा लेते हैं ?

घड़ी को चलने की शक्ति उसमें लगे मुख्य स्परिंग से मिलती है। ये स्परिंग दो-दो फुट लम्बे तार को मोड़कर बनाया जाता है। चाबी भरते समय हम इस ही स्परिंग को कसते हैं। इस मुख्य स्परिंग से शक्ति चार पहियों की रेल से होकर, सन्तोलक पहिये को जाती है। इस पहियों की रेल द्वारा ही घड़ी के डायल पर सुइयें चलती हैं। सन्तोलन पहिया घड़ी का हृदय होता है, जो इसमें पेंडुलम के समान कार्य करता है तथा इसके चलने का नियन्त्रण करता है।

सन्तोलक चक्र के अन्दर बाल-कमानी होती है ये स्परिंग बाल जितने पतले तार का बना होता है ये तार एक पाउंड बढ़िया स्टील से आठ मील लम्बा बनाया जा सकता है। सन्तोलक-चक्र के किनारों पर सोने या स्टील के पेंच लगे रहते हैं। इन पेंचों का स्थान तथा वजन सन्तोलक-चक्र की चाल को नियन्त्रित करते हैं। ये पेंच इतने छोटे होते हैं कि मामूली अंगुश्ताने में ऐसे बीस हजार पेंच रक्खे जा सकते हैं। इसके बाद कगार वाला पहिया होता है। ये पहिया अपने कगारों से सन्तोलक-पहिये को पकड़ता तथा छोड़ता है। इस पकड़ने तथा छोड़ने से ही घड़ी में टिक-टिक की ध्वनि उत्पन्न होती है।

अभी घड़ी के विभिन्न पहियों का जिक्र किया गया है। ये पहिये घड़ी में कीलियों पर स्थित होते हैं और इनमें लगातार रगड़ पैदा होती रहती है। इस लगातार रगड़ को सहन करने के लिए ये कीलियें नन्हे-नन्हे मूल्यवान नगीनों पर लगाई जाती हैं। ये नगीने हीरे, चुन्नी, नीलम तथा तामड़ा या गारनेट में से कोई भी हो सकते हैं। ये ही घड़ी के ज्यूवैल्स होते हैं। नगीने जितने अधिक होते हैं उतनी ही घड़ी के पुर्जों की रगड़ से रक्षा करते हैं। तथा घड़ी को अधिक मूल्यवान और विश्वसनीय बनाते हैं।
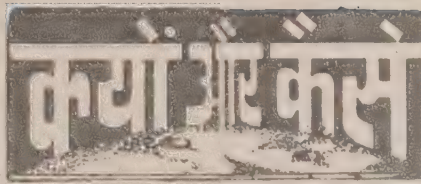
प्र० : बालों के भिन्न रंग कैसे बनते हैं, तथा बाल घुंघराले क्यों होते हैं ?

उ० : हम सब को ही अपने बालों के बारे में जानने की इच्छा तथा उत्सुकता होती है बालों के रंग अलग-अलग क्यों होते हैं तथा ये रंग कहाँ से आता है ? कुछ लोगों के बाल रूखे तथा सख्त, कुछ के सीधे तथा कुछ के घुँघराले क्यों होते हैं ? अभी तक वैज्ञानिकों के पास इन सभी बातों के उत्तर तो नहीं हैं, परन्तु जो बातें हम जानते हैं उनकी चर्चा करते हैं।

बालों की जड़ में एक प्रकार के कोषाणु होते हैं, इनमें बालों के रंग की गाठें होती हैं। इन कोषाणुओं में बढ़ने की शक्ति होती है तथा युवा कोषाणु बाल के साथ ऊपर को बढ़कर मर जाते हैं तथा इन कोषाणुओं में जो रंग का तत्व होता है वो बाल में रह जाता है। इन रंग की ग्रन्थियों में बहुत से रंग होते हैं भूरे, लाली लिये हुए भूरे, कालेपन पर भूरे तथा काले। बालों का रंग पीले रंग के श्रृंगी पदार्थ में छुपा रहता है। इस श्रृंगी पदार्थ तथा रंग के तत्व की गांठ के मिश्रण से होता है। रंग का शेड इन तत्वों के मिश्रण के ढंग पर निर्भर होता है।

भिन्न-भिन्न लोगों के बालों की बनावट में भी अन्तर होता है। यदि बाल को काटकर उसका निरीक्षण किया जाये तो इस अन्तर को भलीभांति देखा जा सकता है। निरीक्षण करने केलिए माइक्रोस्कोप की सहायता लेनी पड़ती है। इस निरीक्षण से हमें पता चलता है की एक निश्चित बनावट होती है जो कि गोल, सपट लम्बोतरी, अण्डाकार तथा मोठ के समान पाई जाती है। बनावट में अन्तर से ही बाल सीधे या घुंघराले होते हैं, बाल की बनावट जितनी सपट होती है, बाल उतना ही घुंघराला होता है इसके विपरीत गोल बनावट वाले बाल सख्त तथा पतले होते हैं। अण्डाकार या मोठ की बनावट के बाल छोटे और घुंघराले होते हैं। ऐसे बाल अधिकतर अफ्रीका के देशों में पाये जाते हैं। इन्हें वूली भी कहते हैं। गोल बाल, सीधे रुखे, लचकदार तथा मोटे होते हैं। रेशमी तथा चिकने और लहरदार घुंघराले बाल भीतर से बनावट में लम्बोतरी शक्ल के होते हैं।

प्र० : स्काउट या गर्ल गाइड क्या होती है, इसकी शुरुआत किस व्यक्ति द्वारा की गई थी ?

उ० : स्काउटों तथा गर्ल गाइडों को प्रशिक्षण देने का अभियान लार्ड बेडन पौवल तथा उनकी बहन द्वारा सन १९०८ तथा सन् १९१० में आरम्भ किया गया था। सन १८७६ में लार्ड पौवल १३वीं हर्सरस में भर्ती हुए थे तथा भारत, अफगानिस्तान और जूलूलेंड में विशेष कार्य किया था। दक्षिणी अफ्रीका की लड़ाई में जो कि सन १८९९-१९०२ तक चली थी में बचाव कार्य के लिये इन्हें विशेष मान्यता मिली और ये मेजर जनरल बना दिये गये।

फौज के अपने तजुरबे के कारण, इन्हें महसूस हुआ कि अंग्रज लड़कों को काफी अधिक शारीरिक प्रशिक्षण की आवश्यकता हैं, तथा घर से बाहर रहने का अभ्यास भी युवा लड़कों के लिए अति आवश्यक है।

साथ ही लड़कियों के लिए इनकी बहन श्रीमती रेगन्स इस कार्य के लिए आगे बढ़ीं और प्रशिक्षण आरम्भ किया।

सन १९२० में लंदन में बुलाई गई एक अंतर्राष्ट्रीय सभा में लार्ड पौवल को संसार के मुख्य स्काउट की मान्यता दी। आज इन्हें कई कलायें जैसे कैम्पों में रहना, सिगनल देना, खाना बनाना, तथा प्राथमिक उपचार सिखाई जाती हैं, ये कलायें इन बच्चों के व्यक्तित्व को उभारने के प्रयास में सिखाई जाती हैं। इस संस्था की सहायता से लड़के तथा लड़कियों को मानसिक तथा शारीरिक विकास में बहुत सहायता मिलती हैं। स्काउटों को दूसरों की सहायता करना भी सिखाया जाता है, तथा अचानक आई मुसीबतों में भी स्काउट बिना घबराये सहायता कार्य में जूट जाते हैं।

वेस्ट इंडीज क्रिकेटरों के भारत के दीवाने अनुभव

कालीचरण

भारत में बादलों की काल्ली घटायें देख दिल झूम उठा। (वही तो दो टैस्ट बचा गयीं)

डेरेक मरे

टैस्ट मैच देखने के लिये भारतीय दर्शक जाने क्यों मरे जाते हैं ?
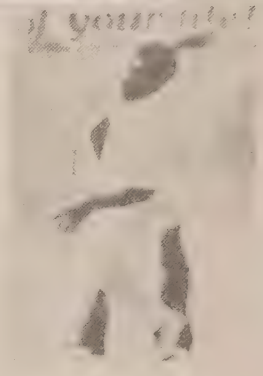
डरेक पैरी

ग्रो भापे, तुन घर जा के मानु ग्रपने पैरो पैहना पउगा !

शेख बकस

कौन कहता है कि बेटस मैन बनना ग्रादमी के बकस की बात नहीं है।

लैरी गोम्ज़

कलकत्ता की भीड़ देख मेरे होश एक बार तो गोम्ज हो गये।

नार्बर्ट फिलिप

मैं यहाँ वालों की धार्मिक ग्रास्था देख हैरान रह गया ! हमारे उधर तो लोग ना पूजा पाठ ना वर्ट (व्रत) में विश्वास रखते हैं।

वैनबर्ग होल्डर

मेरा टैस्ट जीवन ग्रब समाप्त है ग्रब मैं होल्डर लेकर ग्रपने टैस्ट संस्मरण लिखूंगा।

बेसिल विलियम
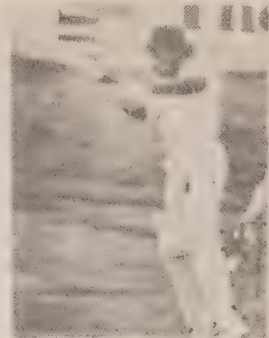
यहा के ग्रखबार वाले बेसिल पैर की बातें लिखते हैं।

सिल्वेस्टर क्लार्क

यहां की प्राचीन सभ्यता ग्रौर कलार्क कृतियां सराहनीय है।

जुमादीन

अभी तो टैस्टों में आये मुझे जुमा-जुमा आठ ही रोज हुये हैं अगली बार आऊंगा तो अपने हाथ दीन रात दिखाऊंगा।

मनेजर
जो सोलोमन

जो है सो ठीक ही हुआ।

शिव नारायण

भारत के दर्शक ?
शिव शिव शिव !! नारायण
नारायण !! नारायण !!!

भारतीय खिलाड़ियों के मुहावरे व बातें

मैल्कम मार्शल

भारत के मिर्च मार्शलेदार भोजन खाकर मुझे दस्त लग गये।
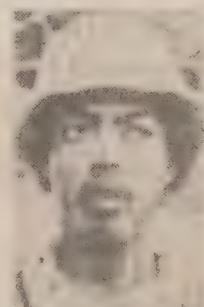
हर्बर्ट चांग

अच्छा हुआ मैंने सैंचुरी नहीं मारी वर्ना बधाई देने वाले दर्शक मेरा कचूमर निकालते और मैं इस प्रकार भला चांगा घर न जा पाता।

सुनील गावस्कर

सुनील सुनाई बात पर विश्वास नहीं करना चाहिये (कि मैं पैकर सीरीज में भर्ती हो रहा हूं)

विश्वनाथ

रस्समाला कप्तान

घावरी

देखने में छोटी लागे घावरी करे गम्भीर (सबसे अधिक विकेटें लीं)

कपिल देव

तालियों की गड़गड़ाहट सुनते २ कान व नाकपिल पिले हो गये।

राजन गुप्त

यमराज ने एक बार जिन्दा आदमी देखने की कोशिश की थी। उस आदमी ने आते ही यमराज की गद्दी हथिया ली थी। वह तो विष्णु भगवान आ गये और गद्दी बच गई। उन्हें सख्त हिदायत दे दी गई कि आइन्दा वे जिन्दा आदमी देखने की कोशिश न करें।

परन्तु यमराज के दिमाग में एक दिन फिर कीड़ा कुलबुलाया और उन्होंने दो यमदूतों को फिर से एक जिन्दा आदमी ले आने के लिए कह दिया।

इस बीच यमलोक में काफी तरक्की हो चुकी थी। एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिये विमान भी बन गये थे। पापी आत्माओं को उपद्रव करने से रोकने के लिए पिस्तौल के आकार के यन्त्र भी बन चुके थे।

वे दोनों यमदूत विमान व उस पिस्तौल के आकार के यन्त्र को लेकर जिन्दा व्यक्ति लेने निकल पड़े। पृथ्वी पर पहुंच कर यान को छुपा व अपना रूप बदलकर वे एक कस्बे में घुस गये।

एक सुनसान-सी गली में उन्हें एक आदमी दिखाई दिया जो कि उस समय ट्रांजिस्टर कान से लगाये कमेन्ट्री सुनने में मस्त था। एक यमदूत ने उस यन्त्र को निकाला और तेजी से उस आदमी की पीठ से चिपका दिया और बोला—

'बगैर शोर मचाये हमारे साथ चलो।'

'लेकिन मैं···। वह आदमी थोड़ा चकराया।

और वे दोनों उसे यान में बैठाकर यमलोक ले आए। वह आदमी आश्चर्य से उन्हें देखता रह गया। फिर लापरवाही से ट्रांजिस्टर सुनने लगा।

उन दोनों यमदूतों ने उसे यमराज के सामने ले जाकर खड़ा कर दिया। फिर यमराज से कहा कि 'महाराज! जिन्दा आदमी हाजिर है!'

यमराज ने खुश होकर उन्हें चार दिन का अवकाश दे दिया। फिर उस आदमी की तरफ मुड़कर बोले—'ऐ मानव! तुम्हारा नाम क्या है?'

वह व्यक्ति चुपचाप खड़ा ट्रांजिस्टर सुनता रहा, उसने यमराज की बात का कोई उत्तर नहीं दिया।

इस पर यमराज ने आगबबूला हो उसके ट्रांजिस्टर को जिसे वे डिब्बा समझ रहे थे छीनने को कहा। यमलोक में रेडियो था परन्तु अभी ट्रांजिस्टर का आविष्कार नहीं हुआ था।

जैसे ही एक यमदूत ने उससे डिब्बा छीनने के लिए उसके हाथ को झटका कि—

'और यह कपिलदेव का छक्का।'

कमेन्ट्री की जोरदार आवाज से यमदूतों के साथ ही साथ खुद यमराज भी उछल पड़े। और वापसी में अपनी कुर्सी समेत लुढ़क पड़े।

वहाँ उपस्थित समस्त दरबारी, यमदूत आत्माएँ यह देख अट्टहास कर उठीं। हुआ यह था कि यमदूत ने जैसे ही हाथ को झटका दिया ट्रांजिस्टर फुल वाल्यूम पर खुल गया।

'खामोश!' यमराज दहाड़े। फिर थोड़ा नम्र होकर उस आदमी से पूछा—

'मानव! यह क्या है?'

'महाराज ट्रांजिस्टर। रेडियो का छोटा रूप जो बैटरी से चलता है।

'और यह क्या आ रहा है?' यमराज सोच रहे थे कि अरे वे तो बेकार डर गये।

'महाराज! भारत व वेस्ट इन्डीज के बीच खेले जा रहे क्रिकेट मैच का आँखों देखा वर्णन आ रहा है।'

यमलोक में और सब खेल थे। परन्तु क्रिकेट नहीं था। यमराज ने इसके बारे में कुछ प्रश्न पूछे। उस आदमी ने उसका यथायोग्य उत्तर दिया। जब यमराज पूरी तरह सन्तुष्ट हो गये तो उन्होंने उन्हें भी कमेन्ट्री सुनाने को कहा।

थोड़ी देर सुनने के पश्चात् उन्होंने चित्रगुप्त से कहा—चित्रगुप्त! बड़ा आनन्द आ रहा है। यह खेल तो अच्छा है। तुम ऐसा करो आकाशवाणी वालों को बुलाकर उनसे कहो कि वे इस सारे यमलोक में अपने केन्द्र से प्रसारित करें ताकि जनता भी आनन्द ले सके।'

इस तरह यमलोक में कमेन्ट्री लोकप्रिय होती गई। कुछ घन्टों के पश्चात् तो यह स्थिती हो गई कि सब ने काम के बजाए रेडियो पर कमेन्ट्री लगाये आराम से बैठकर कमेन्ट्री सुनना शुरू कर दिया। सारी कमेन्ट्री टेप कर ली जाती और जब पृथ्वी से आनी बन्द हो जाती तो फिर उसे चालू कर दुबारा सुनी जाती। दिन रात कमेन्ट्री ही कमेन्ट्री थी।

मैच का वह चौथा दिन था कि ट्रांजिस्टर टें बोल गया। हुआ यह कि बैटरी पहले ही कमजोर थी और फिर पूरे वाल्यूम पर वह दिन भर चलता था इसलिये उसकी बैटरी खत्म हो गई थी।

यमलोक में तो बैटरी कहाँ से मिलती उधर यमराज चिल्लाये जा रहे थे कि इसे शुरू करो, इसे चलाओ वरना हम तुम्हें कठोर दण्ड देंगे।

आदमी को अपना अन्त निकट दिख रहा था। आखिर यमराज इतने अधीर हो उठे कि उन्होंने उस आदमी में इतने जोर से लात मारी कि वह नीचे पृथ्वी पर आ पड़ा। गिरते ही वह उठा और भागा बैटरी डलवाने

इधर अब आगे का आँखों देखा हाल अब वे कहाँ से सुनते। यमलोक के रेडियो तो पकड़ नहीं पाते थे पृथ्वी से कमेन्ट्री. यमराज तो सन्तुष्टी कर गये, परन्तु यमलोक निवासी जो अब तक कमेन्ट्री सुनने के गुलाम से हो चुके थे कहाँ सन्तोष करते।

पूरे यमलोक में जगह-जगह यमलोकवासियों ने हड़ताल कर दी।

अनशन शुरू हो गया। तोड़फोड़ की वारदातें होने लगीं। वहाँ की व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई। यमराज को अपनी गद्दी बचानी भी मुश्किल दीखने लगी। आखिर हार कर यमराज ने देवों के देव भगवान विष्णु को याद किया।

विष्णु भगवान वहां पधारे। वहां का सारा हाल जानकर उनकी भृकुटी तन गई। वे यमराज पर बिगड़े कि मैं तुम्हें गद्दी से उतार दूंगा। तुमने मेरी बात न मानकर फिर जिन्दा आदमी बुलाया और फिर यहां अव्यवस्था फैला दी।

बाद में यमराज के नाक रगड़ने तथा माफी मांगने पर उन्होंने उन्हें क्षमा कर दिया। अब यमलोक वासियों का भी तो उपाय करना था जो अभी तक तोड़-फोड़ मचाये हुए थे।

जब भगवान विष्णु ने इस मैच का आंखों देखा वर्णन अपनी दूरदृष्टी का प्रयोग करके अपने मुखारविन्द द्वारा वर्णित किया और जब जनता ने इसे सुना तब कहीं जाकर वहाँ शान्ति स्थापित हुई।

वापिस जाते हुए उन्होंने यजराज को फिर चेतावनी दे दी कि आइन्दा जिन्दा व्यक्ति फिर न बुलाना। उनके जाने पर यमराज उस जिन्दा आदमी पर इतना गुस्सा हुए कि उन्होंने वह सारा क्रोध उन आत्माओं पर उतारा जो पृथ्वी से आ आकर यमलोक के दरवाजे पर इकट्ठी हो गयी थीं, उन्हें कठोर दण्ड देकर जिन्दा आदमी को तो वे वापिस पृथ्वी पर भेज ही चुके थे।

बन्द करो बकवास

डम-डम डिगा-डिगा
मौसम भिगा भिगा
बन्द करो बकवास
मौसम कैसा ही हो
तुझे मेरी वारी देनी ही
पड़ेगी !

इक परदेसी मेरा दिल ले
गया, जाते जाते मीठा मीठा
गम दे गया !
बन्द करो बकवास. तुम्हें
कितनी बार कहा है कि
परदेसियों से ववल-गम मत
लिया करो !

तितली उड़ो, उड़ जो चली
फूल ने कहा
बन्द करो बकवास सासजी
और चश्मा पहन के देखो,
ये मेरे नोट उड़ रहे हैं जो
मैंने सुखाने रखे थे।

संसार के ये विलक्षण स्मरण शक्ति के धनी

—शक्ति प्रकाश रावत

विश्व का अधिकांश भाग औसत स्मरण शक्ति वाले व्यक्तियों से भरा है परन्तु कुछ उच्च स्मरण शक्ति वाले भी मौजूद हैं। इसके अलावा इतिहास में कुछ ऐसे व्यक्ति भी हुए हैं जिनकी स्मरण शक्ति हमें दांतों तले अंगुली दबाने पर विवश कर देती है।

सर्वप्रथम प्राचीन भारत के श्रुतिधर का नाम इस ओर आता है। उनके बारे में प्रसिद्ध है कि चाहे कैसी और कितनी बड़ी रचना एक बार उन्हें सुना दी जाए, वे तुरंत उसे कण्ठस्थ कर लेते थे। मनोविनोद के लिए कुछ राजा नो मौलिक रचना पर पुरस्कार देने की भी घोषणा करते थे। लोग आते थे और अपनी-अपनी रचना सुना जाते थे। रचना समाप्त होने के बाद ही राजा श्रुतिधर पूरी रचना ज्यों की त्यों दोहरा देते थे, जो कि स्वयं रचयिता भी न कर पाता था।

जापान का एक सौ एक वर्षीय अंधा विद्वान हानावाहोकची (१७२२-१८२३) विश्व साहित्य में स्मरण शक्ति के बलबूते पर अद्वितीय स्थान प्राप्त किये हुए है। सात वर्ष की आयु में उसकी नेत्र ज्योति चली गई थी बाकी के चौरानवे वर्ष उसने पठन-पाठन में व्यतीत किए। उसकी स्मरण-शक्ति इतनी तेज थी कि केवल एक बार सुनकर उसने ४,००,००० पुस्तकों और पाण्डुलिपियों की विषय-वस्तु याद कर ली थी और उन विषयों को उसने हजारों विद्यार्थियों को पढ़ाया। यही नहीं 'गुण शुरुजू' नाम से उसने २८२० जिल्दों की एक निर्देश-पुस्तक का भी सम्पादन किया।

प्रसिद्ध जर्मन विद्वान नेबूर एक समय किसी आफिस में क्लर्क था। एक दिन आफिस में अचानक आग लग गई और सब कागजात जलकर राख हो गए। नेबूर ने जरूरी रजिस्टरों की ज्यों की त्यों कापियां केवल अपनी स्मृति से तैयार कर डालीं।

लिथुआनिया का प्रधान रब्बी एलिजा एक बार जो पुस्तक पढ़ लेता था, उसे कभी नहीं भूलता था। इस तरह उसे २,५०० बड़ी-बड़ी पुस्तकें कंठस्थ थीं।

फिल्डिंग नामक एक अंग्रेज अंधे को दस हजार आदमियों का नाम याद है। उनमें से किसी की भी आवाज सुनकर वह उसके नाम के साथ-साथ उसका पता भी बता देता था।

थैमिस्टौक्लीज नाम का व्यक्ति एथेन्स नगर के २०,००० नागरिकों को उनका नाम लेकर पुकारा करता था।

ईरान के बादशाह साइरस को अपनी फौज के प्रत्येक सिपाही का नाम याद था।

म्यूनिख (जर्मनी) की नेशनल लाइब्रेरी का डायरेक्टर जोजफ बर्नहर्ड दोकन १८२८ में अपनी मृत्यु के समय तक नौ विभिन्न भाषाओं में नौ विभिन्न विषयों पर नौ पत्र नौ सैक्रेट्रियों को एक साथ लिखवा सकता था। इसके अतिरिक्त उसे पूरी बाइबल इस तरह कण्ठस्थ थी कि वह किसी स्थान से भी उसे शब्दशः दोहरा सकता था।

विख्यात कवि जोसफ एडीसन की पुत्री शर्लार एडीसन (१७१९-१७९७) पागल थी। फिर भी उसकी स्मरणशक्ति इतनी तीव्र थी कि ३०० पृष्ठ का शब्दकोश उसे अक्षरशः जबानी याद था और वह किसी भी बात को सुनकर शब्दशः दोहरा सकती थी। ●

दीवाना तेज साप्ताहिक

समाचार पंजीयन (केन्द्रीय) नियम १९६६ के ८ व नियम (संशोधित) से सम्बन्धित प्रेस और पुस्तक अधिनियम की धारा १९-डी की उपधारा (बी) अन्तर्गत अपेक्षित दिल्ली के दीवाना तेज साप्ताहिक नामक पत्र के स्वामित्व तथा अन्य बातों का ब्यौरा।

(१) प्रकाशन का स्थान : दिल्ली

(२) प्रकाशन की आवर्तिता : साप्ताहिक

(३) मुद्रक का नाम : पन्नालाल जैन
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : १२२८, वकीलपुरा, दिल्ली-६

(४) प्रकाशक का नाम : पन्नालाल जैन
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : १२२८, वकीलपुरा, दिल्ली-६

(५) सम्पादक का नाम : विश्वबन्धु गुप्ता
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : ५ टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली।

(६) उन व्यक्तियों के नाम और पते जो समाचार पत्र के स्वामी और भागीदार या कुल पूंजी के एक प्रतिशत के अधिक से शेयर होल्डर हैं। दि डेली तेज प्राइवेट लि० नया बाजार, दिल्ली-६

१. तेज एन्डोमेन्ट ट्रस्ट बर्न वस्टन रोड, दिल्ली-६
२. श्रीमती रक्षा सरन, मटकॉफ हाउस, दिल्ली।
३. मेजर जनरल हिज हाइनेस नवाब सर सैय्यद रजाअली खां बहादुर हर और हाइनेस रफिसत जमानी बेगम खास बाग रामपुर।
४. राय बहादुर बनारसी दास एण्ड कम्पनी प्राइवेट लि० सदर बाजार अम्बाला छावनी।
५. मे० बी० एस० हरीचन्द कपूर एण्ड सन्स, कोहिनूर सिनेमा, राटेड रोड, दादरा बम्बई।
६. मे० बिहारी लाल बैनीप्रसाद महालक्ष्मी मार्केट चांदनी चौक, दिल्ली।
७. लाला कृष्ण दत्त, १३ बाराखम्भा रोड, नई दिल्ली।
८. मे० अपर इण्डिया सुगर मिल्स लि० खतौली।
९. श्री विश्व बन्धु गुप्ता, ५ टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली।
१०. श्री विजय कुमार १७, बाराखम्भा रोड, नई दिल्ली।
११. श्री धर्मपाल गुप्ता, नया बाजार, दिल्ली।
१२. श्री रमेश गुप्ता, नया बाजार, दिल्ली।
१३. कुमारी मंजुल गुप्ता, ५ टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली।
१४. श्री सतीश गुप्ता ५ टॉल्स्टाय मार्ग, नई दिल्ली।
१५. श्री प्रेम बन्धु गुप्ता ५, टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली।
१६. श्रीमती सोनादेवी गुप्ता ५, टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली

मैं पन्नालाल जैन घोषित करता हूं कि मेरी जानकारी के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

पन्नालाल जैन
प्रकाशक के हस्ताक्षर
१-३-७९
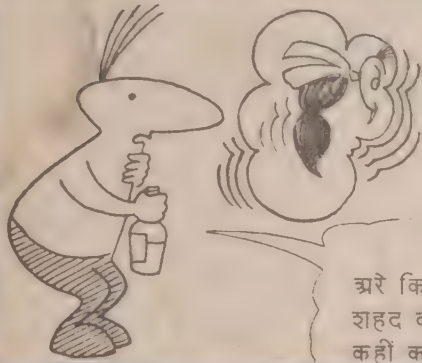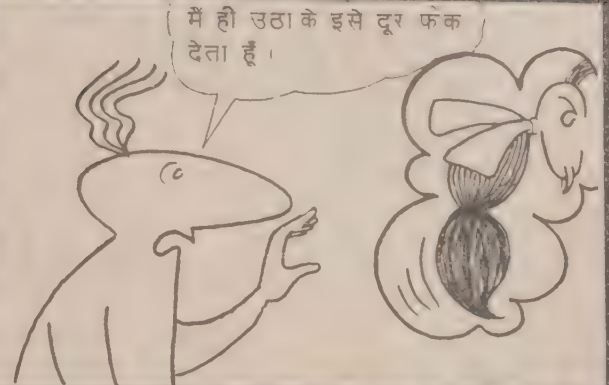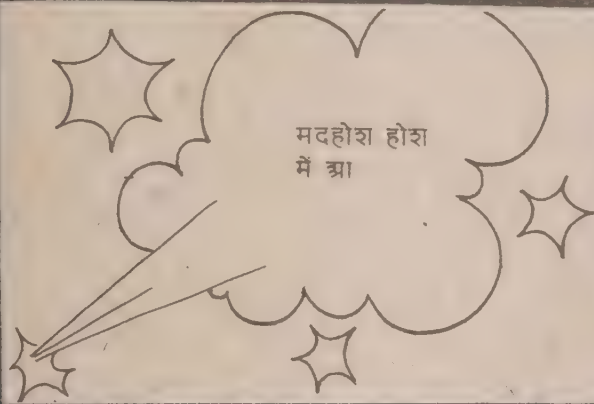
मदहोश
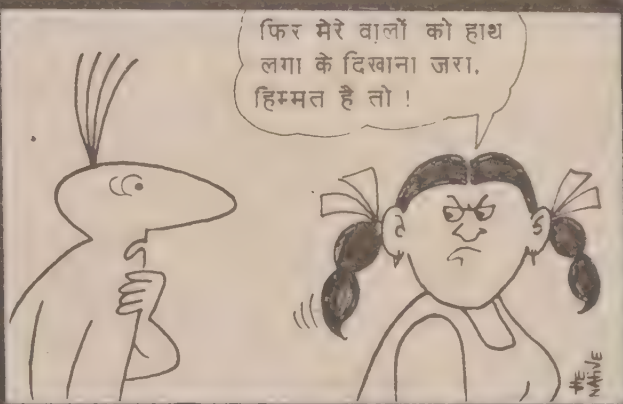
—आलोक गुप्ता

पत्नी—हर समय तुम इमर्जेन्सी के पीछे क्यों पड़े रहते हो जी. वह तो कब की बेचारी हट गई, तुम्हारी अक्ल पर अभी तक वह पर्दे की तरह छाई हुई है ?

पति—पहले मैं इमर्जेन्सी को कोसता था क्योंकि वह हमारा गला घोटती थी. अब इमर्जेन्सी हटाने पर इस स्थिति को कोसता हूं क्योंकि अब तुम लापरवाह हो गई हो। सवेरे का टिफिन ही वक्त पर तैयार नहीं करतीं और मुझे दफ्तर में रोज साहब की खरी-खोटी मिलती है।

पत्नी—यह कैसे हो सकता है जी। क्या तुम्हारे साहब मानस हंस है—दूध के धुले, कि इमर्जेन्सी हटे और उनके कान में जूं ना रेंगे।

●

ट्रैफिक कान्सटेबल से इस्पेक्टर ने कहा देखो वह जो लाल लाईट दिखाई दे रही है न बस वहां से यहाँ तक तुम्हें मोटर साईकल पर गश्त लगाना है। सुबह मुझे रिपोर्ट देना।

एक हफ्ते बाद जब कान्सटेबल वापस आया तो इस्पेक्टर ने चीख कर कहा, 'कहां थे इतने दिन' 'अपनी ड्यूटी पर था। आपने जो लाल लाईट बताई थी वह एक कार की थी। उसी के पीछे गश्त लगाता हुआ यहां लौटा हूं।'

●

एक क्रिकेट खिलाड़ी दिन भर चौके छक्के के बारे में बात करा करता था। एक दिन जब वह कार से जा रहा था तो कोई कार से टकरा गया। वह बोला, अरे कैच छूट गया नहीं तो अभी आउट हो जाता।

●

आपके पास माचिस हो तो दीजिये। पार्क में बेंच पर बैठे एक सज्जन ने दूसरे से कहा।

'जी नहीं, लाइटर है।'

'रहने दीजिये।'

'अरे। लीजिये भी माचिस हो या लाइटर क्या फर्क पड़ता है ?'

'जनाब मैं लाइटर से कान नहीं कुरेद सकता।'

●

अध्यापक : बच्चो, ऐसा कौन सा जानवर है जो शेर से नहीं डरता।

जी शेरनी। आलोक बोला।

●

बच्चा : पिताजी ने चूहे मारने की दवा मंगाई है।

दूकानदार : क्या घर पहुंचानी है ?

बच्चा : जी हां, चूहे तो यहां आयेंगे नहीं।

●

एक आदमी नशे की झोंक में भैंस से टकरा गया और बोला—माफ करना देवी जी गलती हो गई। इस पर दूसरे ने कहा—अबे यह तो भैंस थी। अच्छा आगे ध्यान रखा करूंगा। थोड़ी दूर चल कर वह एक मोटी औरत से टकरा गया और बोला लोग ना जाने क्यों इन्हें सड़कों पर खुला छोड़ देते है।

●

लूटो जेम्स का मज़ा
जीतने के लिए, १००१ मज़ेदार पुरस्कार!
खाली जगह की संख्या बताओ !
2
4
?
64
24
6
2
96
80
20
48
4
जल्दी करो!
प्रवेश-पत्र पहुंचने की अंतिम तिथि : १३-४-१९८९
अपना उत्तर, कॅड्बरिज़ जेम्स के एक बड़े खाली प्लास्टिक पैकेट (३० ग्राम) के साथ भेजो। पहले १००१ सफल प्रतियोगियों को ११ रुपये मूल्य का स्टेट बैंक गिफ्ट चेक मिलेगा।
अपना उत्तर, नाम और पते के साथ केवल अंग्रेजी में और बड़े (ब्लॉक) अक्षरों में लिखो।
Cadbury's GEMS
"Fun with Gems", Dept. No. A 33
Post Box No. 56,
Thane 400 601, Maharashtra
चॉकलेट से भरे रंगीन कॅड्बरिज़ जेम्स
CHAITRA-C-263 HIN
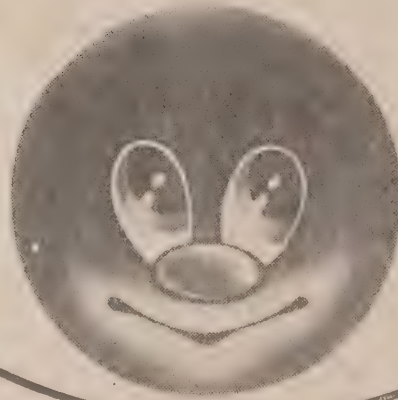
पृष्ठ १३ का शेष

का हत्यारा हूं—यह कहने में तुम्हें फांसी दिलवाना चाहता था—मुझे मेरी पराजय का एहसास दिलाने के लिए कि मैं मधु को नहीं पा सका—और अब यह तुम्हारी है—मेरी—शराफत देखो—यह औरत इतने दिनों मेरे कब्जे में रही। मैं इसे जबर्दस्ती पा सकता था लेकिन तुम्हारी वजह से मैंने इसे छोड़ दिया—तुम्हारी वजह से मेरी बहन की जान गई—तुम मेरे टुकड़ों पर पले, पर मेरी बराबरी करने लगे।'

'रंजन भाई—'

'मैं देख रहा हूँ—धीरे-धीरे वह छत से उतर रही है—मेरी ओर आ रही है—उसके बाल बिखरे हुए हैं—उसके सीने से खून उबल रहा है—उसके साथ ही नादिर खाँ भी है—वे दोनों अपने दोनों हाथों के पंजे उठाते हुए मेरी ओर बढ़े चले आ रहे हैं।'

'रंजन भाई—!'

'नहीं—सीमा।—नहीं—नहीं—।'

रंजन ने जोर की चीख मारी और फिर अपना सिर दीवार में दे मारा।

रंजन जेल में अधिक दिन नहीं रह सका।

उसे पागल घोषित कर दिया गया। पागलपन का आरम्भ तो बहुत पहले हो चुका था। लेकिन उसे कानूनी तौर पर उस दिन पागल घोषित किया गया जिस दिन सेशन में बहस होने वाली थी।

रंजन पहले सिसकियाँ भरता रहा। फिर जोर-जोर से रोने लगा। इतनी ऊँची आवाज में कि सुनवाई स्थगित कर दी गयी और उसके डॉक्टरी मुआइने का आदेश दे दिया गया।

इसके बाद रंजन को पागल घोषित करके उसके घर पहुंचा दिया गया।

सुशील मधु के घर रहता था। लेकिन रोजाना आता था—दोनों समय—लेकिन मधु उसके साथ नहीं होती थी।

सुशील ने किशोर की शादी रजनी के साथ करा दी। रंजन के घर की व्यवस्था भी वही करता था। रंजन चौबीसों घण्टे अपने कमरे में पड़ा रहता था। जैसे इस दुनिया से उसका कोई सरोकार ही न हो।

वह न कभी कपड़े फाड़ता, न लोगों को मारने के लिए दौड़ता न बाहर भागता और न चीखता-चिल्लाता। बस, चुपचाप सिर झुकाए बैठा रहता। अपने हाथों को दाँतों से काटता रहता। उसे नींद नहीं आती थी। बस, जागता हुआ बैठा रहता था।

कभी बोलता तो अपनी माँ और सुशील को कविताएं सुनाने लगता।

एक दिन उसने सुशील से कहा—

'यार, मैं तो पागल हूं—महीनों से—बरसों से—मैं खानदानी पागल हूं—हम सब पागल हैं—तुम पागल मत बनो—मेरे पीछे अपनी और उसकी जिन्दगी बर्बाद मत करो—।'

'किसकी रंजन भाई—?'

'सीमा की—जिसे तुम मधु कहते हो—जाओ उसके साथ रहो—लेकिन इसी घर में आकर रहो—पागल मत बनो—सुशील भाई—यानी सुशील उर्फ वकील जी—'

और फिर वह फूट-फूटकर रोने लगा—सुशील के गले में बाँहें डालकर—जोर-जोर से हिचकियां लेकर।

जब सुशील जाने के लिए मुड़ा तो वह अपने हाथों को दाँतों से काट रहा था। ●

कवितायें।

गैस

नानक हलचल

एक व्यक्ति आया
घिसे पिटे डाक्टर के पास,
धीरे से बोला—
होकर उदास।
पेट में मेरे गैस बन रही है
जिसके कारण मैं हूं परेशान,
डाक्टर ने पूछा—
होकर हैरान।
कार्बन या आक्सीजन
यह और बताओ श्रीमान।

बाढ़ का रहस्य

अखिलेश 'चमन'

बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र के दौरे पर
एक नेता जी ने कहा—
'हमें अफसोस है कि
भयंकर बाढ़ आई,
और आप लोगों को
काफी क्षति पहुँचाई।
किन्तु सच मानिए
यह एक रहस्य की बात है,
इस बाढ़ के पीछे भी
हमारे विरोधियों का हाथ है।
फिर भी हम
आपको विश्वास दिलाते हैं
कि
हम अगर पुनः जीत गए
तो अपने विरोधियों को
पानी-पानी कर देंगे
और बाढ़ में फंसी जनता को
बे पानी कर देंगे।'

ऐ ! चांद ये बता !

—डा० राजीव भारद्वाज

जिन्दगी बदल गई,
रूप भी बदल गये,
ऐ ! चाँद ये बता…!
उगे से क्यों ? तुम ढल गये ॥ १ ॥

रात के आकाश के,
प्रीति के प्रकाश से।
मौन तुम बने रहे,
शक्ति के प्रताप से।
आज वो ! निशा के रंग देखते बदल गये ॥ २ ॥
ऐ ! चाँद ये बता………॥

पंछियों के चह चहे,
डौलिये ! निशा की देख।
सक-पका रवि गये,
देख ये विधान रेख।
और सांध्य लालिमा में वो ! विलीन हो गये ॥ ३ ॥
देखते ही देखते वो ! रंग यूं बदल गये ॥

मोहिनी सी सांध्य का,
बना अभिशाप रूप।
ऊषा सी दुल्हिन का भी,
कैसा ये विचित्र रूप।
वक्त के कारवाँ गुजरते यूं चले गये ॥ ४ ॥
ऐ ! चाँद ये बता उगे से क्यों तुम ढल गये ॥
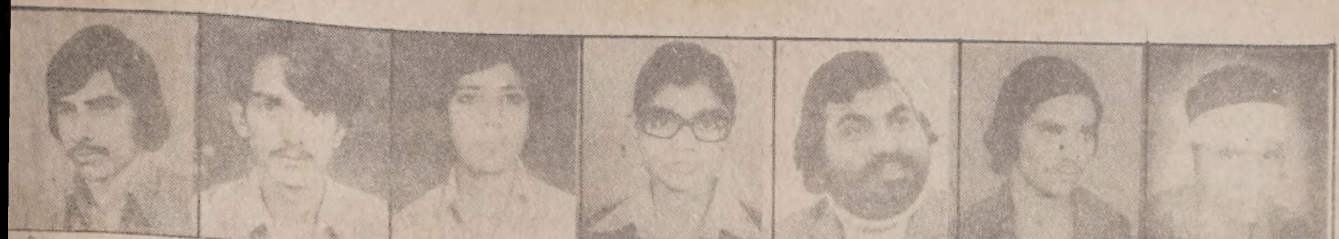
जगदीश कुमार नागपाल, २५३/३ लाल सड़क हांसी-हिसार, २० वर्ष, कम बोलना, सैर करना, पिक्चर देखना, पत्र-मित्रता करना।

रोहताम कुमार मिहल, बी० III, ६६५/१२, गुरु रविदास मार्ग, रोहतक, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता, फिल्में देखना, गाने गाना।

अजय मिश्रा द्वारा श्री मट्टी प्रसाद शर्मा, मो० खाशियान, काशीपुर (नैनीताल), १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, डाक टिकट संग्रह करना।

मुदेश कुमार शर्मा द्वारा मुदेश साड़ी एम्पोरियम, एच० ६, विजय चौक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली, १२ वर्ष, नाटक करना तथा पत्र-मित्रता।

नरेन्द्र डॉबट 'बीना' बावया गली, कपूरथला, २८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, फर्माइश भेजना, मोटर चलाना, पढ़ना, पान खाना।

ललित कुमार मिश्रा, २१-जीवन पराग प्रभात कालोनी सांताक्रुज (पूर्वी) बम्बई १६ वर्ष कहानी सीखना, गाना लिखना।

रवि प्रकाश ए-६८/६३, चन्द्रपुरा, वाराणसी, २० वर्ष, सिक्के, टिकट, पुरानी वस्तुएं तथा उपहार जमा करना, मित्रता करना।

आशु अशोक खुराना, ए/५६ बड़ा पन्ना कलानौर (हरि०), २२ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, लड़कों के साथ घूमना, पढ़ना, क्रिकेट खेलना।

अनिल कुमार गुप्ता, प्रकाश गार्डिश इण्डस्ट्रीज स्टेशन रोड, बड़बिल (उड़ीसा), १६ वर्ष, फिल्में देखना, मित्रता करना।

सर्वजीत 'सोबी' मुहल्ला वावेयां, कपूरथला, २१ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, चुटकुले सुनना, गजल गाना, पढ़ना और सैर करना।

चन्द्रशेखर दूबे द्वारा एच० सी० जैन दत्तपुरा, भरोटी की धर्मशाला, मुरैना, २० वर्ष, मनोरंजक पुस्तकें पढ़ना, समाज सेवा करना।

दीपक अरोड़ा, ६/बी कृष्णा नगर, मथुरा (उ० प्र०), १५ वर्ष, क्रिकेट खेलना, नए-नए दोस्त बनाकर दोस्ती करना तथा पढ़ना।

जय प्रकाश कनौजिया जोगिनका, गोपी गंज, वाराणसी (उ० प्र०), १५ वर्ष, देश-विदेश की सभी भाषायें सीखना, पढ़ना।

साजिद अली, जहांगीराबाद आम वाली मस्जिद भोपाल, ११ वर्ष, कसरत करना, सेहत का खास ध्यान रखना, पढ़ना, खेलना।

नवीन मर्चेन्ट, प्राखील मंजिल मट्टपट्टुल्ली, बेंगलूर, १७ वर्ष, एक्टिंग करना, फिल्म देखना, पढ़ने में कामयाबी हासिल करना।

डा० विनोद सेठ, दाश्पात विधित नजदीक स्टेशन रोड, पड़ाव ग्वालियर, २४ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दूसरों की सहायता करना।

पवन कुमार अग्रवाल, ३०६ सदर कबाड़ी बाजार, मेरठ कैन्ट, २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना तथा शतरंज खेलना, घूमना।

राजन मायमन पवार, बुद्ध-नगर, नागपुर, १८ वर्ष, चिड़ीमार्गी करना, बैडमिंटन खेलना, हाकी, फुटबाल खेलना, गाने सुनना।

अजीत कुमार मोदी, पत्रकार मालवा रेडियो श्रोता एवं फिल्म दर्शन मंच प्रताप नग (राजस्थान), २२ वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

एम० खमर आलम, प्राखील मंजिल मट्टपट्टुल्ली बेंगलूर, १७ वर्ष, फिल्में देखना, एक्टिंग करना, बड़ों का आदर करना।

श्री कृष्ण ब्राह्मणीया, विश्व-कर्मा रोड, नेहरू पार्क, बहादुर-गढ़, १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, फर्माइश भेजना, क्रिकेट खेलना।

संजय कुमार द्वारा मेट्री क्लाथ स्टोर्स, गोला बाजार, रायपुर (म० प्र०), २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, बच्चों से प्यार करना।

योगराज खत्री, २०१-डी० आई० बसंत लाइन पहाड़गंज, नई दिल्ली, १५ वर्ष, राजेश खन्ना की फिल्में देखना, कहानी लिखना।
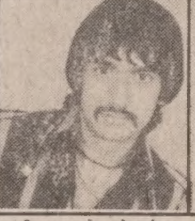
रांबी बजाज, के० श्रो०-श्रो० पी० बजाज, पो० श्रो० ब्रज-राज नगर, जिला सम्बलपुर (उड़ीसा), १८ वर्ष, पढ़ना तथा पिक्चर देखना।

शेख एम० ए० (अकेला) कोनाम सर्विसिज जिद्दा सी-वाटर डीशालटिंग प्लान्ट जिद्दा सऊदी अरब, २८ वर्ष, मित्रता करना।

परमजीत सिंह भाटिया ११६/१२४ बम्बा रोड, कानपुर, १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, घूमना-फिरना, मोटर साईकिल चलाना।

राजू, कागजी मोहल्ला, मीवान, १६ वर्ष, साईकिल चलाना, प्यार से नफरत करना, दूसरों की मदद करना तथा खेलना।

रमेश चन्द्र मंत्री, म० नं० १६०, पोस्ट सिंदरी, जिला धनबाद, पिक्चर देखना, खेलना, पढ़ना, कहानियां लिखना।

मोहन लाल मेंहवा मोहन करना व नावल स्टोर पुरानी आबादी श्री गंगा नगर (राज०), १७ वर्ष, पुस्तकें पढ़ना।

संतोष कुमार राजपाल, गोपाल बाग कालोनी मनमरा इन्दौर, १५ वर्ष, पिक्चर देखना, क्रिकेट खेलना, दौड़ लगाना।

राजकुमार साह नन्दबिहारी साह, पा० बा०, १८ वर्ष, अच्छे कपड़े पहनना, घूमना, कहानी की किताब पढ़ना, हंसना-हंसाना।

अनन्त कुमार जैन मोतीलाल जैन मुकादम लाडपुरा, कर-बला रोड, कोटा, १३ वर्ष, क्रिकेट खेलना, हंसी-मजाक करना।

राज कुमार बजाज, श्री विजय नगर, कुमार रेडियो पैट्रोल पंप के पास, १६ वर्ष, घूमना और गप्पें मारना, हंसना तथा खेलना।

दीवाना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। लिफाफे के कोने पर 'पेन फ्रेन्ड' लिखना व फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना ८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-११०००२

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____

पता ____

आयु ____ शौक ____

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

२२ मार्च से २८ मार्च ७६ तक

मेष : २४ मार्च तक प्राय उत्तम, व्यय यथार्थ, यात्रा लाभप्रद, ग्रहणफल मध्यम है, परिश्रम सफल रहेगा, २५-२६ मार्च व्यर्थ उलझनें बनेंगी, मन परेशान, यात्रा अचानक, व्यय अधिक, घरेलू चिन्ता बनेगी।

वृष : २२ से २४ मार्च तक यात्रा में कष्ट या हानि, कोई जटिल समस्या पैदा होगी, २५ मार्च से मिले-जुले फल प्राप्त होंगे, आय में वृद्धि, परन्तु लाभ कुछ देर से मिलेगा, २७ व २८ मार्च को कारोबार से लाभ।

मिथुन : २४ मार्च तक दौड़-धूप अधिक, कारोबार यथापूर्व, लाभ देर से मिलेगा, रुका पैसा मिलेगा, २५ से २६ मार्च सावधानी से बिताएं, यात्रा न करें, लाभ होता रहेगा, २७ मार्च से आय आशा से अधिक, यात्रा सफल।

कर्क :२७ से २६ मार्च तक सेहत को संभाले रखें, परिवार से सुख, यात्रा सावधानी से की जाए, २५-२६ मार्च व्यय यथार्थ, आय में वृद्धि, यात्रा आसपास की, कारोबार में उन्नति २७, २८ मार्च दिन ठीक नहीं, यात्रा न करें।

सिंह : २४ मार्च तक अच्छी बुरी घटनाएं होती रहेंगी, अपनी बिगाड़ या परेशानी, यात्रा न करें, २५ मार्च से दौड़-धूप अधिक, समय पर सहायता न मिल पाने से जरूरी काम न बन सकेंगे, २७,२८ को लाभ होगा।

कन्या : २४ मार्च तक व्यय अधिक, बीमारी या घरेलू हालात से चिन्ता, नई उलझन पैदा होंगी, २५, २६ मार्च व्यापार से यथार्थ लाभ, सेहत को संभाले रखें, स्त्री पक्ष से सहयोग, काम बनेंगे।

तुला : २४ मार्च तक सरकारी कामों में सफलता, आय में वृद्धि, मित्रों से सहयोग, नए कामों से लाभ होगा, २५, २६ मार्च व्यय की अधिकता रहेगी, कामों में परेशानी या दिल न लगेगा, आर्थिक लाभ बढ़ेगा।

वृश्चिक : २२ मार्च से व्यापार में सुधार, अधूरे काम पूरे होंगे, योजनाएं सफल रहेंगी, ग्रहण फल शुभ है, स्त्री के माध्यम से काम बन सकेंगे, २५, २६ मार्च दिन ठीक रहेंगे, व्यय यथार्थ, अफसरों से सम्पर्क बनेगा।

धनु : २२ मार्च से हालात अच्छे होंगे, शुभ कामों में रुचि, व्यर्थ की चिन्ताओं से चित्त में घबराहट, ग्रहणफल मध्यम है, २५, २६ मार्च अधूरे काम परिश्रम द्वारा पूरे होंगे, व्यापार में उन्नति होगी।

मकर : २४ मार्च तक का समय नेष्ट है, परेशानी बढ़ेगी, उदासीनता तथा निराशा का सामना, २५ मार्च से वातावरण सुधरेगा, भाग्य साथ देने लगेगा, यात्रा सफल, आय यथार्थ, २७, २८ मार्च आय व्यय समान।

कुम्भ : २४ मार्च तक शुभ फलों की प्राप्ति, कारोबार सुधरेगा, लाभ भी अच्छा होगा, यात्रा अचानक ही होगी, २५, २६ मार्च सेहत खराब, आर्थिक लाभ देर से मिलेगा, समाज के कामों में रुचि, व्यापार भी बढ़ेगा।

मीन : २४ मार्च तक मिले-जुले फल मिलेंगे, कोई आवश्यक काम बन जाएगा, यात्रा सफल, २५ मार्च से व्यय बढ़ेगा, नातेदारों से मेल-जोल, मनोरंजन पर व्यय, शत्रु पर विजय, काम देर से बनेंगे परिवार से सुख।

योगिता बाली राजेश खन्ना के साथ फिल्म जनता हवलदार में

योगिताबाली

—विजय भारद्वाज

पिंकी यानी योगिताबाली का जन्म २६ दिसम्बर को बम्बई में हुआ। इन्होंने मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की है। बेबी पिंकी के नाम से सर्वप्रथम इन्होंने बाल नायिका की भूमिका फिल्म 'जवाब आयेगा' में निभाई।

व्यस्क अभिनेत्री के रूप में यह सर्वप्रथम फिल्म 'पर्दे के पीछे' में दिखाई दीं। बाल-भूमिकाओं से व्यस्क भूमिकाओं तक का सफर योगिता ने आसानी से तय किया।

रूप यौवन से भरपूर योगिताबाली एक समय इतनी चर्चा का विषय रही जितनी कोई लोकप्रिय अभिनेत्री रह सकती है। किरण कुमार और योगिताबाली के रोमांस के चर्चे बेहद चर्चा का विषय रहे। योगिताबाली का नाम विनोद मेहरा के साथ भी एक लम्बे समय तक जोड़ा गया। जब यह चर्चा का विषय बन्द हुआ तो योगिता ने अचानक गायक किशोर कुमार से विवाह करके सबको आश्चर्य में डाल दिया और एक लम्बे समय तक चर्चा का विषय रहीं।

अभी इनके विवाह की खबर कुछ ठण्डी ही हुई थी कि योगिता ने किशोर से तलाक की मांग करके फिल्मी हल्कों में एक और खलबली मचा दी। योगिताबाली ने यह रहस्योद्घाटन भी कर दिया कि यह शादी करके उसने बड़ी भूल की है।

रेखा की यह पक्की सहेली हैं। लगभग एक साथ ही इन दोनों अभिनेत्रियों (स... लियों) ने फिल्म उद्योग में प्रवेश किया औ... दोनों के रोमांस व चर्चे गर्म रहे। अब य... अलग बात है कि आज योगिता के बजा... रेखा अधिक प्रसिद्ध है और नम्बर वन ... ओर अग्रसर है।

हाल ही में योगिताबाली की फि... 'आखरी कसम' प्रदर्शित हुई। इस फिल्म ... योगिताबाली ने बेमिसाल अभिनय किया है...

अभिनय क्षमता में योगिताबाली द... हैं, इसमें कोई दो राय नहीं हैं। अपने जमा... की जानी मानी अभिनेत्री गीताबाली की य... भांजी हैं। अभिनय इनके खून में रमा हुअ... है। लेकिन यह केवल दुर्भाग्य ही है ... योगिताबाली को वह सफलता नहीं मि... पाई जो दूसरी अभिनेत्रियां कम समय ... अर्जित कर गईं।

किशोर कुमार से सम्बन्ध विच्छेद ... बाद अब योगिताबाली दोबारा फिल्मों ... सक्रिय हैं और अब उन्हें उम्मीद है कि व... जल्दी ही सफलता प्राप्त कर लेंगी। इनक... आने वाली फिल्में हैं—'दावेदार', 'चोल... दामन', 'बेनकाब', 'शोली और गीत' आदि ... आदि।

योगिता भविष्य में अपने पति के रू... में उस पुरुष को प्राथमिकता देगी और पसन्... करेगी जो इन्हें खूब प्यार करे, अभिना... करने से इन्हें रोके ना, सम्पन्न तथा खर्चील... हो, पहनने और खाने-पीने का शौकीन हो...

कोजी होम, पालीहिल
बान्दरा, बम्बई-४०००५०